वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हिन्दू विश्व

मार्च 01-15, 2025

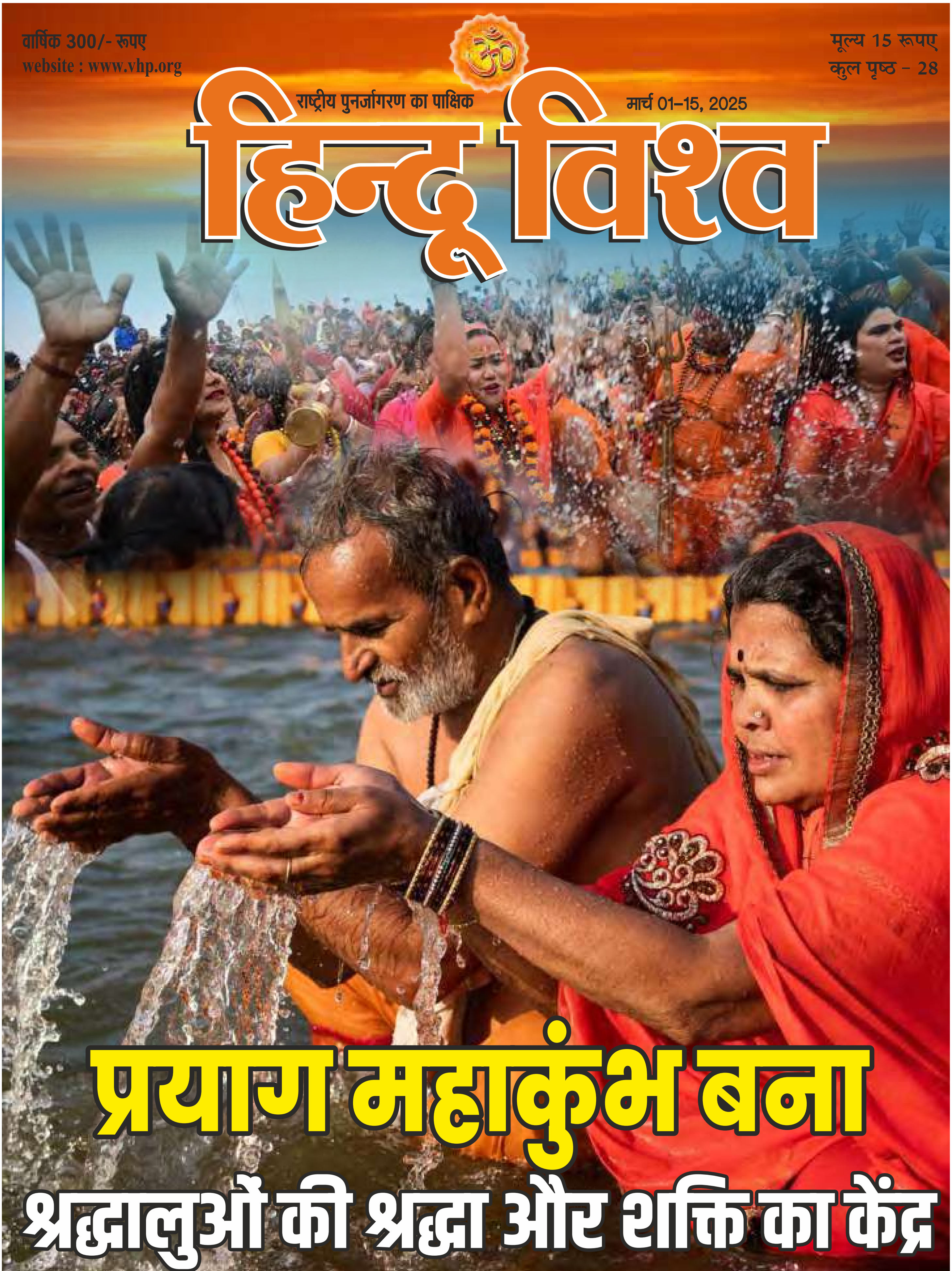

प्रयाग महाकुंभ बना

श्रद्धालुओं की श्रद्धा और शक्ति का केंद्र

@eHinduVishwa /HinduVishwa

प्रयागराज (उ.प्र.) में 7, 8, 9 फरवरी, 2025 को आयोजित विहिप-केन्द्रीय प्रन्यासी मण्डल एवं प्रबंध समिति की बैठक में भारत सहित विदेश से पधारे विहिप के पदाधिकारीगण

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

01-15 मार्च, 2025

फाल्गुन शुक्ल-चैत्र कृष्ण पक्ष

पिंगल संवत्सर

वि. सं. - 2081, युगाब्द- 5126

सम्पादक

विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक

मुरारी शरण शुक्ल

मो. - 7217685539

परामर्शदाता

सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा, धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार, रवि पराशर

व्यवस्थापक

श्री दूधनाथ शुक्ल

मो. - 09582555152

सज्जा

श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :

'हिन्दू विश्व'

संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6

रामकृष्णपुरम्,

नई दिल्ली-110022-05

दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495

hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए वार्षिक डाक व्यय सहित	$ 75 USD
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज - 28

हे वायुदेव ! उज्ज्वल, पवित्र, अति गतिशील, तीक्ष्णतायुक्त यह सोमरस, ऐश्वर्यप्रद यज्ञादि के अवसर पर आपके सहयोग का इच्छुक है। जलों की स्थापना तथा दूसरे स्थान में ले जाने में आपका ही विशेष सहयोग रहता है। हे वायुदेव! निर्बल मनुष्य विपत्तियों के निवारण हेतु आपसे ही प्रार्थना करते हैं। क्योंकि आप ही निरन्तर प्राणवायु के संचार से सम्पूर्ण संसार को आसुरी शक्तियों से संरक्षण प्रदान करते हैं।

– ऋग्वेद

विहिप ने किया युवाओं को आगे आने का आह्वान	05
जनसँख्या असंतुलन, परिवारों में विखंडन और नशाखोरी रोकने के लिए हिन्दु युवाओं का आह्वान	06
महामंत्री की रिपोर्ट	07
विश्व समन्वय-अंतर्राष्ट्रीय समन्वय - (महत्वपूर्ण गतिविधियाँ)	09
नियुक्तियाँ एवं दायित्व परिवर्तन - प्रयाग 09 फरवरी, 2025	17
प्रयागराज में इस बार का कुंभ क्यों कहा जा रहा है महाकुंभ	19
दीपक : हिंदू धर्म में धार्मिक महत्व	21
गुड़ मिठाई नहीं अमृत है	22
प्रकृति पूजा के लिए कुम्भ की यात्रा	23
कर्मयोगी कामेश्वर	26

सुभाषित

तृणोल्कया ज्ञायते ज्ञानरूपं वृत्तेन भद्रो व्यवहारेण साधुः।
शूरो भयेष्वर्थकृच्छ्रेषु धीरः कृच्छ्रेष्वावत्सु सुहृदश्चारयश्च।।

जलती हुई आग से सोने की पहचान होती है, सदाचार से सत्पुरुष की, व्यवहार से साधु की, भय आने पर शूर की, आर्थिक कठिनाई में धीर की और कठिन आपत्ति में शत्रु एवं मित्र की परीक्षा होती है।

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

प्रयाग महाकुंभ 2025

आस्था, संस्कृति और आर्थिक समृद्धि का संगम

प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ 2025 ने ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की है। यह आयोजन न केवल आध्यात्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर और आर्थिक विकास का भी महत्वपूर्ण स्रोत रहा है। महाकुंभ मेला भारतीय संस्कृति की एक प्राचीन परंपरा है, जिसकी जड़ें वैदिक काल तक फैली हुई हैं। समुद्र मंथन की पौराणिक कथा के अनुसार, अमृत कलश से गिरती बूंदों ने प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक को पवित्र स्थलों के रूप में प्रतिष्ठित किया। हर 12 वर्षों में आयोजित होने वाला महाकुंभ मेला इन स्थलों पर लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है। 2025 का महाकुंभ विशेष रूप से महत्वपूर्ण था, क्योंकि वर्षों बाद एक दुर्लभ खगोलीय संयोग के अंतर्गत आयोजित किया गया, जिसने इसे और भी पवित्र बना दिया।

महाकुंभ मेला सामाजिक समरसता और धार्मिक एकता के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है। विभिन्न जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र तथा 80 देशों के माता गंगा के भक्त एकत्रित होकर संगम में स्नान कर चुके हैं। इस वर्ष के मेले में लगभग 600 मिलियन (60 करोड़) से अधिक श्रद्धालुओं ने भाग लिया, जो कई देशों की जनसंख्या से भी अधिक है।

मेले में नागा साधुओं, संतों और विभिन्न अखाड़ों की उपस्थिति ने धार्मिक उत्साह को और बढ़ाया। विशेष रूप से, इस वर्ष एक नए किन्नर अखाड़े की स्थापना ने समावेशिता और सामाजिक स्वीकार्यता के नए आयाम स्थापित किए। जनजातियों, बौद्ध, सिक्ख शिविरों की सहभागिता ने हिंदू समाज को विखंडित करने वाले नैरेटिव को ध्वस्त कर दिया है।

महाकुंभ 2025 ने स्थानीय और भारत की अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। आयोजन के लिए लगभग $800 मिलियन (लगभग 6,000 करोड़ रुपये) का बजट निर्धारित किया गया था, जबकि इससे उत्पन्न राजस्व $40 से $50 बिलियन (लगभग 4 से 5 लाख करोड़ रुपये) के बीच अनुमानित है।

इस महाकुंभ ने पर्यटन, परिवहन, होटल, रेस्टोरेंट और छोटे व्यवसायों को प्रोत्साहित किया। स्थानीय हस्तशिल्प और व्यापारियों को भी बड़े पैमाने पर लाभ हुआ, जिससे रोजगार के अवसर बढ़े और क्षेत्र की आर्थिक स्थिति में श्रद्धालुओं की विशाल संख्या को ध्यान में रखते हुए, प्रशासन ने व्यापक तैयारियां कीं। लगभग 150,000 (1.5 लाख) अस्थायी शौचालयों की स्थापना की गई, जिससे स्वच्छता सुनिश्चित हो सके। इसके अलावा, 50,000 से अधिक सुरक्षा कर्मियों की तैनाती की गई, जिसमें पुलिस, होमगार्ड और विशेष कमांडो शामिल थे, ताकि मेले के दौरान कानून और व्यवस्था बनाए रखी जा सके।

मेले के मध्य में अत्यधिक भीड़ के कारण भगदड़ की घटनाएँ हुईं, जिसमें कुछ श्रद्धालुओं की मृत्यु हुई और कई घायल हुए। इन घटनाओं के बावजूद, प्रशासन ने त्वरित प्रतिक्रिया देते हुए भीड़ प्रबंधन के लिए ए.आई. संचालित कैमरों और चेहरे की पहचान तकनीक का उपयोग किया, जिससे भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।

हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि प्रयाग महाकुंभ 2025 ने ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर स्थापित किया है। यह आयोजन न केवल भारतीय संस्कृति और आस्था का प्रतीक है, बल्कि सामाजिक एकता, आर्थिक समृद्धि और प्रशासनिक दक्षता का भी उदाहरण है। हालांकि कुछ चुनौतियाँ सामने आईं, लेकिन समग्र रूप से महाकुंभ 2025 ने विश्व पटल पर भारत की सांस्कृतिक विरासत और संगठनात्मक क्षमता को प्रदर्शित किया है।

इस महाकुंभ ने पर्यटन, परिवहन, होटल, रेस्टोरेंट और छोटे व्यवसायों को प्रोत्साहित किया। स्थानीय हस्तशिल्प और व्यापारियों को भी बड़े पैमाने पर लाभ हुआ, जिससे रोजगार के अवसर बढ़े और क्षेत्र की आर्थिक स्थिति में श्रद्धालुओं की विशाल संख्या को ध्यान में रखते हुए, प्रशासन ने व्यापक तैयारियां कीं। लगभग 150,000 (1.5 लाख) अस्थायी शौचालयों की स्थापना की गई, जिससे स्वच्छता सुनिश्चित हो सके।

जनसंख्या असंतुलन, संस्कारों के क्षरण व नशाखोरी पर अंकुश हेतु

विहिप ने किया युवाओं को आगे आने का आह्वान

प्रयागराज, 7 फरवरी, 2025। विहिप के केंद्रीय प्रन्यासी मंडल बैठक के द्वितीय सत्र में पारित एक प्रस्ताव में कहा गया है कि हिंदुओं की घटती जनसँख्या दर, हिंदू परिवारों के विखंडन, लिव इन संबंध, युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति चिंतनीय है। इसमें देश की युवा पीढ़ी से कहा गया है कि ये समस्याएँ हिंदू समाज के लिए चुनौती बन गई हैं, जिनका जवाब उन्हें देना होगा। विहिप के संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेंद्र जैन ने आज प्रयागराज में पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि देश के सामने आने वाली हर चुनौती का हिंदू युवा शक्ति ने हमेशा जवाब दिया है। जनसंख्या असंतुलन हिंदू समाज के अस्तित्व के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। हिंदुओं की घटती हुई जनसंख्या बहुआयामी प्रभाव निर्माण करती है। हिंदू इस देश की पहचान है। अगर हिंदू घटा तो देश की पहचान और अस्तित्व के लिए भी संकट के बादल छा जाएंगे। इस स्थिति को रोकने के लिए हिंदू युवाओं को आगे बढ़ना होगा। उन्होंने कहा कि देरी से विवाह और उज्जवल भविष्य की भ्रामक अवधारणाओं के मकड़ जाल के कारण भी हिंदू दंपतियों के बच्चे कम हो रहे हैं। विहिप ने आह्वान किया कि 25 वर्ष की उम्र में विवाह करना आज की आवश्यकता है।

डॉक्टर जैन ने बताया कि कई वैज्ञानिक अध्ययनों ने यह सिद्ध किया है कि यदि बच्चों का संपूर्ण विकास करना है, तो प्रत्येक परिवार में दो या तीन बच्चे अवश्य होने चाहिए। प्रस्ताव में कहा गया है कि आज हिंदू संस्कारों के अभाव में परिवार संस्था पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं, पश्चिमी भौतिकवाद का बढ़ता प्रभाव, अर्बन नक्सल षड्यंत्र व ग्लोबल कॉरपोरेट समूह मनोरंजन माध्यम व विज्ञापनों के द्वारा युवाओं को भ्रमित व संस्कार विहीन बना रहा है। इसी कारण विवाहेत्तर संबंध और लिव इन संबंध भी बढ़ रहे हैं।

विहिप ने युवाओं को अपनी जड़ों की ओर लौटने का आह्वान किया, जिससे सुखी पारिवारिक जीवन सुनिश्चित किया जा सके और बच्चों तथा बुजुर्गों को सामाजिक व भावनात्मक सुरक्षा भी दी जा सके। देश में बढ़ती हुई नशे की प्रवृत्ति पर भी विहिप ने चिंता व्यक्त की। 16 करोड़ से अधिक लोगों का नशे का आदी होना इस समस्या की भीषणता को प्रकट करता है। विहिप ने युवाओं का आह्वान किया कि वे स्वयं भी नशे की आत्मघाती प्रवृत्ति से दूर रहें तथा अपने शिक्षण संस्थान नगर व प्रांत को भी नशे से मुक्त बनाने के लिए वह बजरंग दल दुर्गावाहिनी व अन्य संगठनों का सहयोग करें। साथ ही विहिप ने विभिन्न सरकारों से भी मांग की कि वे नशे के व्यापार में लिप्त माफियाओं और आतंकियों के गठजोड़ पर अंकुश लगाएँ व कठोर कानून बनाकर इस पर पूर्ण रोक लगाने का प्रयास करें। विहिप ने संकल्प लिया है कि वह अपनी लाखों इकाइयों, सत्संग व संस्कार शालाओं और सत्संग केंद्रों के माध्यम से इन सब विषयों पर जन जागरण करेगी और युवा शक्ति को इन प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाने का आह्वान करेगी।

मंदिर मुक्ति आंदोलन की रणनीति के साथ महाकुंभ में संपन्न हुई

विहिप की त्रि-दिवसीय बैठक

महाकुंभ शिविर, प्रयागराज, 9 फरवरी, 2025। महाकुंभ मेला क्षेत्र स्थित विश्व हिंदू परिषद शिविर में चल रही त्रि–दिवसीय बैठक रविवार को इस संकल्प से साथ पूरी हो गई कि अब किसी भी स्थिति में हम मंदिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्ति दिला कर ही रहेंगे। बैठक में उपस्थित देश–विदेश के 950 प्रतिनिधियों ने मिलकर एक बड़ी रणनीति भी बनाई है। इस बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए विहिप के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आलोक कुमार ने आज कहा कि मंदिर मुक्ति आंदोलन के प्रथम चरण में विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ता अन्य हिंदू संगठनों के साथ मिलकर प्रत्येक राज्य के मुख्यमंत्री को ज्ञापन दे कर मांग करेंगे कि सरकारें हिंदू मंदिरों को वापस हिंदू समाज को सौंपे। उत्तर भारत और दक्षिण भारत में बड़ी जनसभाएँ कर इस संबंध में अपनी मांगे बुलंद करेंगे।

आंदोलन के दूसरे चरण में प्रत्येक राज्य की राजधानी व महानगरों में वहाँ के बुद्धजीवी समाज की सभाएँ कर इसके लिए व्यापक जन समर्थन जुटाएंगे।

तृतीय चरण में जिन राज्यों में यह समस्या ज्यादा विकट है, वहाँ आगामी विधानसभा सत्र के दौरान हमारे कार्यकर्ता विधानसभा और विधान परिषद के सदस्यों से मिलकर वहाँ के राजनीतिक दलों पर मंदिरों की मुक्ति हेतु दबाव बनाएंगे। कुंभ मेला क्षेत्र में एक पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए विहिप अध्यक्ष ने बताया कि बैठक में इस बात पर भी सहमति बनी कि मंदिरों को अपने नियमित कामकाज के संचालन हेतु अधिकतम स्वतंत्रता होनी चाहिए। मंदिर प्रबंधन में किसी भी प्रकार का बाहरी नियंत्रण अब स्वीकार्य नहीं होगा। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि मंदिर मुक्ति आंदोलन में हम केवल उन्हीं मंदिरों की बात कर रहे हैं, जो अभी तक सरकारी नियंत्रण में है, अन्य मंदिरों की नहीं।

श्री आलोक कुमार ने कहा कि हमारा मत है कि मंदिर के पैसों को केवल हिंदू कार्यों के लिए खर्च किया जाना चाहिए। इस संबंध के कानून में पूरी तरह से पारदर्शी बही–खाते और अंकेक्षण की व्यवस्था होगी।

मंदिरों के संचालन में संपूर्ण हिंदू समाज की सहभागिता और मंदिरों के लिए बने ट्रस्ट में अन्य लोगों के साथ महिलाओं व अनुसूचित समाज का प्रतिनिधित्व भी होगा। मंदिरों के अर्चकों, पुरोहितों व अन्य कर्मचारियों को मिलने वाले वेतन व भत्तों में कोई कमी नहीं की जाएगी और किसी भी हालत में उनका वेतन उस राज्य के लिए निर्धारित न्यूनतम वेतन से कम नहीं होगा।

उन्होंने यह भी बताया कि विहिप प्रतिनिधि जब मुख्यमंत्रियों को मिलने जाएंगे, तो वह अपने साथ उस राज्य के लिए इस संबंध में प्रस्तावित कानून का एक प्रारूप भी उनको सौंपेंगे। बैठक में देश भर के सभी प्रांतों के अलावा ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, हांगकांग मॉरीशस, दक्षिणी अफ्रीका, फ्रांस, थाईलैंड, श्रीलंका, नेपाल बाँग्लादेश, गुयाना जैसे अनेक देशों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

बैठक में पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, नागरिक कर्तव्य, स्वदेशी व स्व का बोध जैसे पांच परिवर्तनों को भी जनमानस के आचार, व्यवहार और संस्कारों का हिस्सा बनाने का संकल्प लिया गया। विश्व भर में हिंदू समाज से जुड़े अन्य ज्वलंत मुद्दों पर भी विस्तार से विचार विनिमय हुआ।

इस बैठक में युग पुरुष पूज्य स्वामी श्री परमानंद जी महाराज व बौद्ध लामा पूज्य श्री चोसफेल ज्योत्पा जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर कार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबोले तथा पूर्व सर कार्यवाह व विहिप के पालक अधिकारी श्री भैया जी जोशी भी उपस्थित रहे।

जारीकर्ता : विजय शंकर तिवारी
राष्ट्रीय प्रचार प्रसार प्रमुख–विहिप

पारित प्रस्ताव

जनसँख्या असंतुलन, परिवारों में विखंडन और नशाखोरी रोकने के लिए हिंदू युवाओं का आह्वान

वर्तमान समय में हिन्दू समाज अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक और जनसांख्यिकीय चुनौतियों से जूझ रहा है। विशेष रूप से नशे की बढती प्रवृत्ति, घटती जनसंख्याँ दर, देरी से विवाह, परिवारों का हिन्दू संस्कारों से दूर होना और विखंडन जैसी गंभीर समस्याएँ उभर रही हैं। यदि इन समस्याओं का समाधान नहीं निकाला गया, तो ये हिन्दू समाज की स्थिरता और अस्तित्व के लिए घातक सिद्ध हो सकती हैं। विश्व हिन्दू परिषद् का प्रन्यासी मंडल व प्रबंध समिति आह्वान करती है कि इन चुनौतियों का सामने करने व उनको परास्त करने के लिए हिन्दू युवाओं को तत्पर होना पड़ेगा। देश के सामने जब भी चुनौतियाँ आई हैं, युवा शक्ति ने ही उन्हें बार–बार परास्त किया है।

जनसंख्या असंतुलन हिन्दू समाज के अस्तित्व के लिए घातक सिद्ध होता जा रहा है, 1951 में भारत में हिन्दुओं की जनसंख्या 84 प्रतिशत थी, जो अब घटकर 78 प्रतिशत रह गई है। हिन्दुओं की औसत प्रजनन दर 1.9 हो गई है, जो जनसंख्या स्थिरता की दर 2.1 से भी कम है। देरी से विवाह और उज्ज्वल भविष्य की भ्रामक अवधारणा के कारण हिन्दू दंपत्तियों के बच्चे कम हो रहे हैं। बच्चों को जन्म देना या कम करने की प्रवृति केवल हिन्दू समाज के अस्तित्व के लिए ही नहीं, अपितु परिवार के सुखी एवं सुरक्षित भविष्य के लिए संकट बन चुकी है। मनोवैज्ञानिक, चिकित्सकों व समाज शास्त्रियों ने इस तथ्य को स्थापित किया है। यदि बच्चों का सम्पूर्ण विकास करना है, तो प्रत्येक परिवार में दो या तीन बच्चे अवश्य होने चाहिए। इस परिस्थिति से बचने के लिए हिंदू युवाओं को उपयुक्त आयु में विवाह करना आज की आवश्यकता है। उपयुक्त आयु में विवाह ना होने के कारण जन्म–दर में गिरावट हो रही है और परिवार का भविष्य संकट में पड़ रहा है।

उच्च गुणवत्ता की शिक्षा दिलाने के लिए अपने बच्चों को बड़े–बड़े प्रतिष्ठानों में प्रवेश दिलाने की प्रतिस्पर्धा लगी है। इनकी ऊंची फीस के कारण शिक्षा की लागत बढ़ती है और परिवारों को छोटा रखने को विवश करती है। हिन्दू संस्कारों पर आधारित परिवार व्यवस्था ही सुखी जीवन को सुनिश्चित कर सकती है। आत्मकेंद्रित भौतिकवाद के कारण हम अपने संस्कारों की अनदेखी कर रहे हैं। अर्बन नक्सलपंथी एवं ग्लोबल कॉर्पोरेट समूह युवाओं को संस्कार विहीन करने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं। परिवार विखंडित हो रहे हैं। बच्चों व बुजुर्गों के सामने सामाजिक सुरक्षा की समस्या उत्पन्न हो रही है।

विवाह संस्था, जो सुदृढ़ समाज का आधार है, वह संकट में पड़ रही है। इस विषय पर माननीय सर्वोच्च न्यायलय भी चिंता व्यक्त कर चुका है। परिवारों के प्रति भ्रांत धारणा के कारण ही विवाहेत्तर सम्बन्ध, लिव–इन सम्बन्ध व असीमित भोग के कई प्रकारों के प्रति आत्मघाती आकर्षण बढ़ रहा है। युवाओं में नशे की बढ़ती प्रवृति एक गम्भीर संकट के रूप में देश के सामने आ रही है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 16 करोड़ लोग, जिनमें अधिकांश युवा हैं, किसी ना किसी नशे के शिकार हो चुके हैं। शिक्षण संस्थानों, सीमावर्ती क्षेत्रों सहित सम्पूर्ण देश में नशाखोरी हिन्दू युवाओं की शारीरिक, बौद्धिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक जड़ों को कमजोर कर रही है। इससे समाज में अपराध, बेरोजगारी और पारिवारिक विघटन की घटनाएँ भी बढ़ रही हैं। इस षड्यंत्र में विदेशी आतंकवादी, अन्तर्राष्ट्रीय ड्रग माफिया और भारत के कई माफिया समूह संगठित रूप से सम्मिलित हैं।

विश्व हिन्दू परिषद का प्रन्यासी मंडल एवं प्रबंध समिति इस परिस्थिति पर घोर चिंता व्यक्त करती है और युवा हिन्दू पीढ़ी को आह्वान करती है कि वे हिन्दू समाज को कमजोर करने के इन

षड्यंत्रों को परास्त करने के लिए कृत संकल्प हों। देश के चिंतकों, समाज शास्त्रियों, शिक्षा शास्त्रियों, सामाजिक – धार्मिक संगठनों व पूज्य संतों से भी यह निवेदन करती है कि वे अपने–अपने प्रभाव क्षेत्रों में इन सभी विषयों पर जनजागृति अभियान प्रारम्भ करें।

भारत की केंद्र व राज्य सरकारें, हिन्दू समाज व राष्ट्र के समक्ष उपस्थित इस गंभीर विषय की गंभीरता को समझें। मनोरंजन व संचार माध्यमों पर उचित नियंत्रण स्थापित कर उन्हें हिंदू संस्कारों को अपमानित करने व अनियंत्रित उपभोग को प्रोत्साहित करने से रोकना चाहिए। शिक्षा संस्थानों को मनमानी फीस लेने से रोकने हेतु कठोर प्रावधान बनाने चाहिए। नशे के व्यापार में लिप्त इस अपवित्र गठ–जोड़ पर कठोर नियंत्रण करें, शिक्षा शास्त्रियों, कथावाचकों, पूज्य संतों व सामाजिक धार्मिक संगठनों का सहयोग लेकर उपरोक्त विषयों पर जनजागरण करें। हिन्दू संस्कारों व समाज विरोधी दुष्प्रचार को रोकने के लिए कठोर कदम उठाएँ।

प्रस्तावक : श्री नीरज दोनेरिया, राष्ट्रीय संयोजक, बजरंग, दिल्ली

अनुमोदक : सुश्री प्रज्ञा महाला, राष्ट्रीय संयोजिका दुर्गावाहिनी, भुवनेश्वर

महामंत्री की रिपोर्ट
(जनवरी से दिसम्बर, 2024)

एक दृष्टिक्षेप में

संगठन – विभाग–336, जिला–1,210, प्रखण्ड–10,002, समिति–77,777, सत्संग–27,317, बजरंग दल संयोजक–56,966, मातृशक्ति संयोजिका–10,083, दुर्गावाहिनी संयोजिका–10,901, कुल पूर्णकालिक–495, समिति दर्शन कार्यक्रम के प्रखण्ड–3,363,

कार्य – बाल संस्कार केन्द्र–1,757, संस्कारशालाएँ–944, प्रतिभा विकास केन्द्र–1,044, सेवा कार्य–5,390, गोरक्षा (कसाईयों से गोवंश को बचाया)–1,38,221, परावर्तन–25,606, धर्मान्तरण से बचाया–66,093, हिन्दू कन्या रक्षा–9,507, विभागीय समरसता यात्रा : सम्पर्कित स्थान–1,411 कार्यक्रम–3,499, नियमित कुल सेवा कार्य : स्वास्थ्य–1,441, शिक्षा–813, रोजगार–9,789, (सबके लाभार्थी संख्या) – 4,82,138, रामायण परीक्षा (नैतिक शिक्षा) : जिला–269, विद्यालय–3,049, विद्यार्थी–4,82,138 भाषा–हिन्दी, अँग्रेजी, मराठी, तमिल, तेलगु, मलयालम, कन्नड़, गुजराती, असमिया, प्रांतस्तरीय जिला मंत्री/सहमंत्री वर्ग : उपस्थिति–899, जिला निवासी वर्ग – (दो दिवसीय/डेढ़ दिवसीय) वर्ग–247, जिला–184, उपस्थिति–5,945, प्रांत मार्गदर्शक मण्डल बैठक उपस्थिति–1,301, जिला मार्गदर्शक मण्डल गठित जिले–188, पर्यावरण वृक्षारोपण – 2,44,420.

कार्यक्रम – स्थापना दिवस : स्थान–12,094 उपस्थिति–18,86,466, दुर्गाष्टमी : स्थान–5,605 उपस्थिति–3,04,077, मानवंदन : स्थान–752 उपस्थिति–83,752, बजरंग दल शौर्य दिवस : स्थान–2,163 उपस्थिति–2,37,104, बजरंग दल शौर्य संचलन : स्थान–400 उपस्थिति–1,31,122, गोपाष्टमी : स्थान–3,034 उपस्थिति–1,45,820, धर्मरक्षा दिवस : स्थान–3,584, उपस्थिति–1,21,852, सामाजिक समरसता : स्थान–1,838, उपस्थिति–1,52,804.

कार्यवृत्त

बजरंग दल

प्रान्त टोली कार्यकर्ता	–	287
विभाग	–	332
विभाग संयोजक	–	224
जिले	–	1,118
जिला संयोजक	–	1,089
जिला टोली	–	839
प्रखण्ड	–	9,428
प्रखण्ड संयोजक	–	6,852
कुल संयोजक	–	69,023
कुल पूर्ण इकाईयाँ	–	17,721
साप्ताहिक मिलन	–	9,554
औसत उपस्थिति		
बलोपासना केन्द्र	–	1,472
औसत उपस्थिति		
मासिक बैठक वाले प्रखण्ड	–	2,702
औसत उपस्थिति	–	958
मासिक वर्ग वाले प्रखण्ड	–	1,096
औसत उपस्थिति	–	782

वर्ष 2024 में उपलब्धियाँ –

स्वावलंबी हिन्दू (रोजगार)	–	3,321
हिन्दू कन्या रक्षा	–	3,380
गौवंश रक्षा	–	1,08,032
धर्मान्तरण से बचाव	–	17,711
परावर्तन	–	3,539
शस्त्र पूजन कार्यक्रम	–	6,949
कुल उपस्थिति	–	2,09,066
त्रिशूल दीक्षा कार्यक्रम	–	2,457
कुल दीक्षार्थी	–	1,45,673
प्रखण्डों में त्रिशूल दीक्षा	–	622
गाँवों की संख्या	–	4,049
गाँवों में नई ग्राम संयोजक इकाई बनी	–	3,352

त्रिशूल दीक्षा

नगर	–	133
बस्ती	–	1,995

हुतात्मा दिवस (रक्तदान)
11 से 17 नवम्बर, 2024

स्थान	–	6,61
यूनिट	–	23,429
रक्तघट पंजीकरण	–	22,547

संस्कार सप्ताह – रन फॉर हेल्थ
(23 नवम्बर से 01 दिसम्बर, 2024)

प्रखण्ड	–	565
उपस्थिति	–	42,105

कबड्डी

प्रतियोगी प्रखण्ड	–	529
खिलाड़ी	–	8,316
उपस्थिति	–	39,508

शौर्य दिवस (गीता जयंती
11 से 17 दिसम्बर, 2024 तक)

शौर्य यात्रा प्रखण्ड	–	1,151
उपस्थिति	–	1,66,311
सभागार कार्यक्रम	–	4,984
उपस्थिति	–	1,42,904

मातृशक्ति

क्षेत्रीय संयोजिका	–	11
सह क्षेत्र संयोजिका	–	2
प्रांत संयोजिका	–	41
सह संयोजिका	–	37
प्रांत टोली	–	41
प्रांत उपाध्यक्ष	–	32
विभाग संयोजिका	–	274
सह विभाग संयोजिका	–	17
जिला संयोजिका	–	1,000
सह जिला संयोजिका	–	343
प्रखंड संयोजिका	–	3,762
अन्य संयोजिका	–	2,383
कुल संयोजिका	–	11,780
जिला टोली	–	218
जिला उपाध्यक्ष	–	353

'कार्यक्रम'

रक्षा बंधन

स्थान	–	2,959
रक्षा सूत्र	–	44,289

शस्त्र पूजन

स्थान	–	9,117
संख्या	–	18,487

मानवंदना यात्रा

स्थान	–	683

'सेवा कार्य'

बाल संस्कार केन्द्र	–	1,407
सत्संग	–	2,095
सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र	–	52
श्रृंगार प्रशिक्षण केन्द्र	–	75
स्वास्थ्य परीक्षण शिविर	–	42
योग केन्द्र	–	127
मंदिर स्वच्छता	–	652
वृक्षारोपण कार्यक्रम	–	5,300
तुलसी पूजन कार्यक्रम	–	2,700

दुर्गावाहिनी

प्रांत संयोजिका	–	39
प्रांत सह संयोजिका	–	50
विभाग संयोजिका	–	120
जिला संयोजिका	–	815
प्रखंड संयोजिका	–	4,035
अन्य संयोजिकाएँ	–	5,530
कुल संयोजिकाएँ	–	9,801
शक्ति साधना केंद्र	–	592
मिलन केंद्र	–	1101
बाल संस्कार केंद्र	–	873

रक्षा बंधन कार्यक्रम

स्थान	–	2,083
संख्या	–	32,533

स्थापना दिवस कार्यक्रम

स्थान	–	3,363
संख्या	–	74,501

अखंड भारत कार्यक्रम

स्थान	–	576
संख्या	–	10,473

दुर्गाष्टमी कार्यक्रम :

स्थान	–	1881
संख्या	–	59,045

मानवंदना यात्रा

स्थान	–	683
संख्या	–	1,03,696

मान वंदना शोभा यात्रा

स्थान	–	268
संख्या	–	51,631

शस्त्र पूजन

स्थान	–	9,117
संख्या	–	4,05,381
दुर्गाष्टमी कार्यक्रम	–	11,266

लक्ष्मी बाई जयंती

स्थान	–	429
संख्या	–	15,291

मकर संक्रांति कार्यक्रम

स्थान	–	256
संख्या	–	9,748

शस्त्र दीक्षा कार्यक्रम

स्थान	–	43
संख्या	–	14,769

रानी दुर्गावती पंच शताब्दी कार्यक्रम

स्थान	–	139
संख्या	–	23,602

देवी अहिल्या त्रि शताब्दी कार्यक्रम

स्थान	–	213
संख्या	–	15,648

अन्य कार्यक्रम

उज्जैन (मालवा प्रांत) में शक्ति संगम

संख्या	–	35,000

मुंबई (कोंकण प्रांत) शक्ति समागम

संख्या	–	4,000

सेवा कार्य

संस्कार शाला	–	171
कोचिंग सेंटर	–	30
सिलाई केंद्र	–	50
मेंहदी / श्रृंगार	–	67

सत्संग

सत्संग संख्या	–	21,738

सत्संग विस्तार सप्ताह कार्यक्रम

प्रांत सत्संग वर्ग

संख्या	–	20
उपस्थिति	–	960
प्रमुख युक्त जिले	–	780
प्रांत सत्संग टोली	–	24
वृक्षारोपण	–	24,734

विश्व समन्वय-अंतर्राष्ट्रीय समन्वय - (महत्वपूर्ण गतिविधियाँ)

1. यूएसए

- अमेरिका के विहिप ने 2024 में डलास–फोर्ट वर्थ, टेक्सास और एशबर्न, वीए में दो नए अध्याय जोड़े, जबकि ह्यूस्टन, टेक्सास अध्याय को पूरी ताकत से पुनर्जीवित किया। इन अतिरिक्तताओं के साथ, वीएचपीए अब पूरे अमेरिका में 14 अध्याय और 7 इकाइयाँ संचालित करता है।
- 22 जनवरी 2024 को श्री राम जन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में, अमेरिका की विहिप ने 23 मार्च से 26 मई तक राम रथ यात्रा का आयोजन किया। नेतृत्व टीम ने सड़क मार्ग से 23,803 मील और हवाई मार्ग से 3,600 मील की यात्रा की, अयोध्या से अक्षत और प्रसादम वितरित करने के लिए 49 राज्यों के 800 मंदिरों का दौरा किया। 18 अगस्त को, VHPA ने NYC इंडिया डे परेड में श्री राम जन्मभूमि पर मंदिर का चित्रण करने वाली एक झांकी प्रदर्शित की।
- सपोर्ट–ए–चाइल्ड (एसएसी) – यह वीएचपीए सेवा पहल 14 राज्यों में 21 अध्यायों तक फैली हुई है। 2024 में, एसएसी ने +357,365 का वितरण किया, जिससे आदिवासी और ग्रामीण भारत के 2,676 बच्चों को लाभ हुआ।
- बाल विहार – हिंदू सांस्कृतिक गौरव और हिंदी भाषा सीखने को बढ़ावा देने वाला साप्ताहिक दो घंटे का कार्यक्रम। वर्तमान में अटलांटा, बोस्टन, जर्मनटाउन, एशबर्न और गेन्सविले में सक्रिय, यह 60 स्वयंसेवकों के सहयोग से 400 से अधिक छात्रों को सेवा प्रदान करता है।
- पारिवारिक शिविर – एमए में सप्ताह भर चलने वाले विवेकानंद शिविर और एमडी में शांतिनिकेतन शिविर ने आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और मनोरंजक गतिविधियों की पेशकश की। इन समृद्ध सत्रों में 75 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- शारदा छात्रवृत्ति – प्रत्येक +2,000 की 12 छात्रवृत्तियाँ (चार वर्षों में फैली हुई) प्रदान की गईं।
- हिंदू विरासत माह – 2021 में स्थापित, यह पूरे अक्टूबर में 150 से अधिक भागीदारों द्वारा आयोजित सांस्कृतिक, धार्मिक और परोपकारी कार्यक्रमों के साथ मनाया जाता है।
- एचएमईसी और एचएमपीसी – 17वीं एचएमईसी और 11वीं एचएमपीसी 27 से 29 सितंबर 2024 तक रैले, एनसी में आयोजित की गई, जिसमें 65 मंदिरों और संगठनों के 200 प्रतिनिधि शामिल हुए।
- ओम हिंदू सामुदायिक केंद्र, एमए – दिसंबर 2024 तक, सभी विग्रह स्थापित कर दिए गए हैं।
- प्रकाशन – हिंदू विश्व, एक त्रैमासिक पत्रिका और 2025 के लिए थीम वाला हिंदू कैलेंडर महत्वपूर्ण हिंदू घटनाओं और विषयों पर प्रकाश डालता है।

2. ऑस्ट्रेलिया

- ऑस्ट्रेलिया की वीएचपी ने 20 अप्रैल, 2024 को सिडनी में 'बढ़ता समुदाय, संपन्न ऑस्ट्रेलिया' विषय के तहत 7वें ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन में संघीय मंत्रियों, संसद सदस्यों और महापौरों के साथ–साथ 55 संगठनों के 300 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- बच्चों का शिविर 11–14 जुलाई, 2024 तक आयोजित किया गया था।
- वीएचपी संस्कृत स्कूल में नए नामांकन के लिए खुले दिन के साथ, 10 फरवरी, 2024 को क्वेकर्स हिल सामुदायिक केंद्र में श्री लक्ष्मी हयग्रीव और श्री सरस्वती पूजा का आयोजन किया गया।
- होता फोरम एनएसडब्ल्यू – 10वां वार्षिक हिंदू संगठन, मंदिर और संघ (एचओटीए) फोरम एनएसडब्ल्यू 19 मई, 2024 को सिडनी में आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में मंदिरों, स्कूलों और सामुदायिक संघों सहित 55 हिंदू संगठनों की भागीदारी देखी गई।
- HOTA फोरम विक्टोरिया – अनुदान आवेदनों और हिंदू अंतिम संस्कार सेवाओं को संबोधित करने के लिए 70 से अधिक संगठनों का समन्वय किया और 23 मार्च 2024 को अपनी पहली बैठक आयोजित की। दूसरा कार्यक्रम, वार्षिक रक्षा बंधन उत्सव, 17 अगस्त, 2024 को 300 उपस्थित लोगों के साथ आयोजित किया गया था।
- हिंदू धर्म और संस्कृत कक्षाएँ (विशेष धार्मिक शिक्षा) – 23 मार्च, 2024 को हिंदू धर्म और संस्कृत कक्षाओं के लिए शिक्षक प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया। भावी शिक्षकों के लिए हिंदू धर्म शास्त्र प्रशिक्षण 14 मई, 2024 को रिवरबैंक और जॉन पामर पब्लिक स्कूलों में आयोजित किया गया।
- श्रीमती अकिला रामरथिनम और पाँच विशेष धार्मिक शिक्षा (एसआरई) स्वयंसेवकों ने अगस्त, 2024 में 500 छात्रों के लिए हिंदू धर्मग्रंथ कक्षाएँ शुरू कीं। विद्या विहार विक्टोरिया ने साप्ताहिक संस्कृत और हिंदू धर्म कक्षाएँ प्रदान करना जारी रखा। ऑस्ट्रेलिया में एसआरई और सामुदायिक भाषा स्कूलों के माध्यम से हिंदू धर्म और संस्कृत कक्षाओं से 30,000 हिंदू बच्चों को लाभ मिलता है, जिसमें 120 से अधिक स्कूलों में 200 से अधिक स्वयंसेवी शिक्षक भाग लेते हैं।
- हिंदू यूथ ऑस्ट्रेलिया ने 1 सितंबर, 2024 को मुलग्रेव में एक युवा नेतृत्व कार्यशाला, 'बी द चेंज' आयोजित की।
- दक्षिण ऑस्ट्रेलिया, एडिलेड की वीएचपी ने हिंदू धार्मिक संस्कारों का समर्थन करते हुए ऑस्ट्रेलिया सरकार द्वारा अनुमोदित हरिश्चंद्र घाट का उद्घाटन किया।
- 27 जून, 2024 को आयोजित यहूदी–हिंदू संवाद ने संबंधों

को मजबूत किया और यहूदी केयर विक्टोरिया द्वारा सह–मेजबानी की गई।

3. न्यूजीलैंड

- दूसरा न्यूजीलैंड हिंदू बुजुर्ग सम्मेलन शनिवार, 26 अक्टूबर 2024 को रोटोरुआ के हिंदू हेरिटेज सेंटर में आयोजित किया गया था। उसी दिन, गुरु पूर्णिमा उत्सव मनाया गया, जिसमें छात्रों ने शिक्षकों और समुदाय के नेताओं के प्रति उनके मार्गदर्शन के लिए सम्मान और आभार व्यक्त किया।
- 2010 में स्थापित परंपरा को जारी रखते हुए 'मानवता के लिए स्वास्थ्य योगाथॉन' पूरे न्यूजीलैंड में शनिवार, 8 जून से शनिवार, 22 जून 2024 तक आयोजित किया गया था।
- HOTA फोरम हर साल दो प्रमुख कार्यक्रम आयोजित करता है, जिसमें अगस्त में रक्षा बंधन महोत्सव भी शामिल है, जो सार्वभौमिक भाईचारे और महिलाओं के प्रति सम्मान को बढ़ावा देता है। इसमें माओरी, चीनी, जापानी, थाई, फिजी और अन्य समुदायों के समूहों द्वारा विविध सांस्कृतिक प्रदर्शन पेश किए जाते हैं।
- न्यूजीलैंड पुलिस के सहयोग से, 15 अक्टूबर 2024 को हिंदू हेरिटेज सेंटर में एक निःशुल्क एनजेड पुलिस भर्ती सेमिनार आयोजित किया गया।
- हिंदू हेरिटेज सेंटर में साप्ताहिक हिंदी कक्षाएँ और हिंदू धर्मग्रंथ सत्र, संस्कृत श्लोकों और मंत्रों पर केंद्रित चल रहे हैं। केंद्र ने श्री हेम चंद और उनकी टीम द्वारा एक रामायण पाठ की भी मेजबानी की।
- हिंदू एल्डर्स फाउंडेशन रोटोरुआ द्वारा आयोजित पहला भजन और कीर्तन सम्मेलन 6 दिसंबर 2024 को हुआ।
- हिंदू यूथ न्यूजीलैंड (HYNZ) ने यूएन यूथ ऑकलैंड और AIESEC द्वारा आयोजित ऑकलैंड विश्वविद्यालय में ECOSOC सम्मेलन में 'अर्थशास्त्र में सांस्कृतिक एकीकरण को समझना' नामक एक कार्यशाला का आयोजन किया।

4. ताइवान

- हिन्दी की कक्षाएँ नियमित रूप से आयोजित की जाती हैं।
- मकर संक्रांति – इस कार्यक्रम को 'महामृत्युंजय' और 'गायत्री' मंत्रों के जाप द्वारा चिह्नित किया गया था।
- हिंदू नववर्ष, बैसाखी और चेटी चंद – ये त्योहार 'सुंदरकांड' के पाठ के साथ खुशी से मनाए जाते थे।
- रक्षा बंधन – उत्सव में शुभ 'श्री सत्यनारायण पूजा' शामिल थी।
- शारदीय नवरात्रि (अक्टूबर) का आयोजन।
- स्थानीय अधिकारियों के साथ चर्चा – ताइपे में एक हिंदू मंदिर के निर्माण पर चर्चा के लिए भारतीय दूतावास में स्थानीय सरकारी अधिकारियों और भारतीय व्यापार संघ (आईटीए) के साथ कई बैठकें आयोजित की गईं।

5. थाईलैंड

- हार्ट (हिंदू आपातकालीन सहायता और राहत दल) – सेवा गतिविधियाँ–
- पाक्रेट, नॉनथबुरी में 120 विकलांग महिलाओं की सहायता की गई।
- चियांग राय में बाढ़ पीड़ितों को राहत प्रदान की गई।

सांस्कृतिक गतिविधियाँ - कार्यक्रम

- भारत से बैंकॉक में बुद्ध अवशेषों का स्वागत किया गया।
- आर्य समाज में होलिका दहन एवं साथोर्न में होली रंगोत्सव का आयोजन।
- कवि सम्मेलन के साथ मनाया गया हिंदू नव वर्ष।
- राम नवमी पर श्री राम चरित मानस का अखंड पाठ आयोजित किया गया।
- पर्यावरण–अनुकूल गणेश महोत्सव आयोजित किया गया।
- सरकारी सहयोग से दीपावली स्नेह मिलन और 6 दिवसीय दीपावली उत्सव की मेजबानी की।

दुर्गा वाहिनी और खेल आयोजन

- डॉ. प्रीदा पेडी और डॉ. संजीव चतुर्वेदी द्वारा महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए योग सत्र का नेतृत्व किया गया।
- 16 जून 2024 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का समर्थन किया।
- वीएचपी बैडमिंटन मास्टर्स 2024, दूसरी श्रृंखला का आयोजन।

बाल गीता पाठशाला

- भारत के ऐतिहासिक व्यक्तित्वों पर केन्द्रित कार्यक्रम आयोजित किये गये।
- बैंकॉक के स्कूलों में हिंदी निबंध प्रतियोगिताओं की मेजबानी की।

पटाया-चोनबुरी-रेयॉन्ग अध्याय

- होली का रंगोत्सव मनाया और पटाया में लिटिल इंडिया हब का प्रस्ताव रखा।
- सोंगक्रान और दीपावली त्योहार मनाए गए, उसके बाद लोय क्रथॉन्ग मनाया गया।
- अन्य महत्वपूर्ण घटनाएँ – बाँग्लादेश में हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों के खिलाफ अत्याचार के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए बाँग्लादेश दूतावास के सामने 300 से अधिक सदस्यों के साथ एक विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया।

6. मलेशिया

- अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस को चिह्नित करने के लिए, आरआईएस इंटरनेशनल स्कूल के सहयोग से, 7 मार्च 2024 को बुकिट जलील में एक महिला मंच की मेजबानी की गई।
- 14 अप्रैल 2024 को ब्रिकफील्ड्स में प्रमुख हिंदू संगठनों के साथ तमिल पुथंडु (नए साल) का एक संयुक्त उत्सव आयोजित किया गया था, जिसमें गतिविधियाँ, प्रदर्शन और शाकाहारी भोजन उत्सव शामिल था।

- 13 अगस्त 2024 को संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद को एक पत्र भेजा, जिसमें बाँग्लादेश में धार्मिक अल्पसँख्यकों, विशेषकर हिंदुओं पर हिंसक हमलों की निंदा की गई।
- बाँग्लादेश में हिंदुओं और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा की वकालत करते हुए, 15 अगस्त 2025 को बाँग्लादेश उच्चायोग के सामने हिंदू गैर सरकारी संगठनों के गठबंधन द्वारा एक ज्ञापन प्रस्तुत करने के साथ एक प्रदर्शन आयोजित किया गया था।
- विहिप के स्थापना दिवस और जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में, 25 अगस्त 2024 को श्री कृष्ण मंदिर, ब्रिकफील्ड्स में श्री कृष्ण रुक्मणी तिरुकल्याणम की मेजबानी की गई।
- 21 अक्टूबर 2024 को मुफ्ती बिल 2024 के संबंध में एक प्रेस बैठक में भाग लिया और गैर–मुसलमानों पर इसके प्रभाव के बारे में चिंता जताते हुए एक ज्ञापन सौंपा।
- महिला उद्यमिता फोरम का आयोजन 29 नवंबर 2024 को इपोह में सेलेक्टा बिजनेस स्कूल और पेराक महिला विकास के साथ किया गया था।

7. हांगकांग

- 28 सितंबर 2024 को हिंदू स्वयंसेवक संघ (एचएसएस) के साथ आयोजित रक्षा बंधन कार्यक्रम, हांगकांग में अपनी तरह का एकमात्र सार्वजनिक उत्सव है। इस कार्यक्रम में विभिन्न राष्ट्रीयताओं के लगभग 500 लोगों ने भाग लिया।
- स्वयंसेवकों ने हिंदू एसोसिएशन ऑफ हांगकांग और समान अवसर आयोग के प्रतिनिधित्व में भारतीय वाणिज्य दूतावास के गणमान्य व्यक्तियों के साथ एक कार्यक्रम आयोजित किया। 'विकसित भारत और यूनिवर्सल फेलोशिप को बढ़ावा देने' की अवधारणा को खूब सराहा गया।
- सरकारी अधिकारियों और वाणिज्य दूतावास के प्रतिनिधियों ने विभिन्न समुदायों के बीच एकता को बढ़ावा देने के लिए वीएचपी और एचएसएस की प्रशंसा की। विहिप ने हिंदू समुदाय में उनके योगदान के लिए दिवंगत श्री दादा तोलाराम बाबानी (व्यक्तिगत क्षमता में) और हिंदू एसोसिएशन ऑफ हांगकांग (एक संगठन के रूप में) को पहला सामुदायिक उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किया।
- 26 अक्टूबर को हिंदू मंदिर में दीपावली पर अपने पांचवें 'होम अवे फ्रॉम होम' उत्सव की मेजबानी की, जिसमें आठ विश्वविद्यालयों के 120 छात्र उपस्थित थे।

8. श्रीलंका

- गणेश चतुर्थी उत्सव को भव्यता के साथ मनाया – कोलंबो में आठ स्थानों सहित छह जिलों में जुलूस और गणेशजी का विसर्जन हुआ, जिसमें लगभग 1,000 प्रतिभागी शामिल हुए। मध्य प्रांत के नुवारा एलिया जिले में, कोटागाला में 4,000 से अधिक हिंदू एक विशेष विसर्जन और जुलूस में शामिल हुए, जिसका व्यापक प्रसारण किया गया।
- अशोक वाटिका सीता मंदिर कुंभाभिषेकम – यह समारोह सीता एलिया मंदिर, अशोक वाटिका में आयोजित किया गया था, जो श्रीलंका में देवी सीता का बंदी स्थल है। दुनिया भर से हिंदुओं ने भाग लिया, अयोध्या से सरयू जल लाया गया और वहाँ के मंदिर से पवित्र वस्तुएँ भेजी गईं।
- हिंदू मंदिर सम्मेलन – कैंडी जिले में एक दिवसीय सम्मेलन में 80 मंदिरों के 120 प्रतिभागियों ने भाग लिया और साथ ही कैंडी जिले में 20 वीएचपी मंडलों का उद्घाटन किया।

9. यूके

- यूके के चैरिटी कमीशन द्वारा चैरिटेबल इनकॉर्पोरेटेड ऑर्गनाइजेशन (CIO) का दर्जा दिया गया था।
- परिचालन दक्षता में सुधार के लिए, संगठन का काम अब तीन विभागों (डिवीजनों) में विभाजित है।
- दक्षिण विभाग – इलफोर्ड, न्यूहैम, क्रॉयडन और हर्टफोर्डशायर को कवर करता है
- मिडलैंड्स विभाग – लीसेस्टर, नॉटिंघम, नॉर्थम्प्टन और वेस्ट मिडलैंड्स को कवर करता है
- उत्तरी विभाग – बोल्टन, मैनचेस्टर और यॉर्कशायर को कवर करता है। प्रत्येक प्रमुख को त्रैमासिक बैठकें आयोजित करने, रिपोर्ट प्रस्तुत करने और स्थानीय कार्यकारी समितियों के साथ जुड़ने के लिए शाखाओं का दौरा करने की आवश्यकता होती है।
- हिंदू मंदिर नेटवर्क ने संवारने और धार्मिक रूपांतरण के बारे में जागरूकता का आकलन करने के लिए पूरे ब्रिटेन में हिंदुओं के बीच एक सर्वेक्षण किया। हिंदू त्योहार मनाए, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम आयोजित किए।
- विजयदशमी पर एक नई टीम के साथ पश्चिम लंदन शाखा को फिर से शुरू किया गया।
- फरवरी 2024 में, पुरी फाउंडेशन के प्रायोजन के साथ, मुफ्त सेवाओं की पेशकश करते हुए, अंत्येष्टि (हिंदू अंत्येष्टि संस्कार) कार्यक्रम शुरू किया।
- साउथ मिडलैंड्स शाखा का उद्घाटन 19 नवंबर को किया गया, इसकी नई टीम पेश की गई।

10. नॉर्वे

- दिवाली सांस्कृतिक कार्यक्रम – 9 नवंबर 2024 को ग्रोरुड सैमफुनशूस में आयोजित, जिसमें 500 से अधिक हिंदू उपस्थित थे। कार्यक्रम का उद्घाटन भारत के राजदूत ने किया।
- वसुधैव कुटुंबकम पर सेमिनार – वैश्विक एकता और शांति को बढ़ावा देने के लिए 'विश्व एक परिवार है' विषय का पता लगाने के लिए 20 सितंबर को आयोजित किया गया। भारतीय, श्रीलंकाई, नेपाली और इस्कॉन समुदायों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रमुख वक्ताओं ने इस शाश्वत ज्ञान की प्रासंगिकता पर जोर दिया।
- अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस – 15 जून 2024 को ओस्लो में भारत दूतावास के सहयोग से आयोजित किया गया।
- विरोध – 13 अगस्त को नॉर्वेजियन संसद के सामने 'बाँग्लादेश में हिंदुओं और अल्पसंख्यकों को बचाने' के लिए प्रदर्शन।

- होली साँस्कृतिक कार्यक्रम – 6 अप्रैल को आयोजित, जिसमें सांस्कृतिक प्रदर्शन होगा।
- चालू गतिविधियाँ – 35 छात्रों के साथ साप्ताहिक हिंदी कक्षाएँ और हर मंगलवार और गुरुवार को नॉर्वेजियन कक्षाएँ।

11. दक्षिण अफ्रीका

- ऐतिहासिक दक्षिण अफ्रीकी राष्ट्रीय हिंदू सम्मेलन, 'संयुक्त समुदाय' विषय के तहत आयोजित किया गया, 'मजबूत दक्षिण अफ्रीका' 9–10 नवंबर, 2024 को डरबन में हुआ। सन्यास परिषद के सम्मानित सन्यासियों सहित 42 संगठनों के लगभग 300 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। संघीय हिंदू मंत्रियों और संसद सदस्यों ने भी भाग लिया और भाषण दिया। डरबन में 1995 के विश्व हिंदू सम्मेलन के 29 साल बाद आयोजित इस कार्यक्रम में दक्षिण अफ्रीका में हिंदुओं और बड़े पैमाने पर समाज दोनों की बेहतरी के लिए संकल्पों को लागू करने के हिंदू समुदाय के सामूहिक कर्तव्य पर जोर दिया गया। सम्मेलन ने हिंदू समुदाय को सशक्त बनाने के लिए दो प्रमुख प्रस्ताव अपनाए–
- उन्नत प्रतिनिधित्व – सरकार, न्यायपालिका, कूटनीति, सशस्त्र बलों और नेतृत्व भूमिकाओं में अधिक हिंदू प्रतिनिधित्व की वकालत करना।
- एकता और वकालत – हिंदू संस्थाओं को एकजुट करने के लिए हिंदू संगठनों, मंदिरों और एसोसिएशन फोरम (HOTA) की स्थापना करना। पहलों में राजनीतिक भागीदारी के लिए एक हिंदू फंड बनाना, रूढ़िवादिता का मुकाबला करने के लिए एक मीडिया टीम बनाना, धार्मिक रूपांतरण का मुकाबला करना और हिंदू छात्रों के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करना शामिल है।
- दक्षिण अफ्रीका में हिंदू युवाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए तीन श्रेणियों में एक राष्ट्रीय कला और संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- दक्षिण अफ्रीका में मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों को संबोधित करने में हिंदू संगठनों की सहायता के लिए ट्रेन–द–ट्रेनर मैनुअल की शुरुआत करते हुए अपना पहला मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता प्रोजेक्ट लॉन्च किया।
- आपदा राहत – जून 2024 में टोंगाट में आए बवंडर के बाद, पीड़ितों के लिए घरों के पुनर्निर्माण के लिए धन जुटाया गया। संगठन ने भोजन और कपड़े वितरित करने के लिए विश्वरूप धर्मशाला के साथ भी साझेदारी की।
- संन्यास परिषद का दौरा – हिंदू संगठनों के बीच एकता को मजबूत करने के लिए जोहान्सबर्ग और केप टाउन में संन्यास परिषद की यात्रा की मेजबानी की। स्वामी समुदायों के साथ जुड़े रहे, चुनौतियों का समाधान किया और आध्यात्मिकता को बढ़ावा दिया।
- अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस – लेनासिया में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। संगठन प्रतिवर्ष भारत के महावाणिज्य दूतावास के साथ आईडीवाई कार्यक्रमों का समर्थन करता है।
- बाँग्लादेश हिंसा विरोध – विरोध प्रदर्शन 18 अगस्त को शुरू हुआ, जिसका समापन 31 अगस्त को राष्ट्रीय विरोध दिवस के रूप में हुआ। बाँग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ अत्याचारों को उजागर करने वाला एक ज्ञापन जारी करने के लिए हिंदू डरबन सिटी हॉल, प्रिटोरिया के यूनियन बिल्डिंग और केप टाउन के पार्लियामेंट गार्डन में एकत्र हुए।
- हिंदू–यहूदी बैठक – एसए यहूदी बोर्ड ऑफ डेप्युटीज के साथ एक बैठक में दक्षिण अफ्रीका में प्रमुख मुद्दों पर दोनों समुदायों के बीच तालमेल का पता लगाया गया।
- हिंदू स्टूडेंट्स एसोसिएशन (एचएसए) – यूकेजेडएन में एचएसए कार्यक्रमों का समर्थन किया और हिंदू युवा भागीदारी का विस्तार करने के लिए यूसीटी में एचएसए की स्थापना में योगदान दिया।
- हिंदू विरासत माह और बिंदी दिवस – अंतर्राष्ट्रीय बिंदी दिवस पर 15 अक्टूबर को हिंदू विरासत का जश्न मनाते हुए एक वेबिनार और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

12. कनाडा

- शहरों में कई स्वयंसेवी समूहों की स्थापना की और समुदाय के नेताओं, सरकारी प्रतिनिधियों और हिंदू संगठनों सहित प्रमुख हितधारकों को शामिल किया। वे अब 6,000 से अधिक हिंदुओं और 200 से अधिक मंदिरों और संगठनों की संपर्क जानकारी बनाए रखते हैं।
- श्री राम जन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में सभी 10 प्रांतों में 30,000 किलोमीटर से अधिक की दूरी तय करने वाली राम रथ यात्रा का आयोजन किया गया। यात्रा ने 190 मंदिरों का दौरा किया, अयोध्या से अक्षत और प्रसाद वितरित किया और 200 से अधिक कार्यक्रम आयोजित किए।
- 75 से अधिक हिंदू सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित किए, मंदिरों पर हमलों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन आयोजित किए। हिंदूफोबिया और हिंसा से निपटने के लिए प्रस्तावित कानून बनाए।

13. सूरीनाम

- राधा कृष्ण मंदिर (कश्मीरस्ट्रेट) कई वर्षों तक बंद रहने के बाद फिर से खुल गया। प्रस्थान करने वाले बोर्ड ने इसे वीएचपी सूरीनाम को सौंप दिया, जिसने इसके संचालन को पुनर्जीवित करने के लिए एक नया बोर्ड नियुक्त किया।
- राष्ट्रीय विजयादशमी उत्सव पहली बार सूरीनाम में आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में रावण दहन को मुख्य आकर्षण के रूप में दिखाया गया और इसमें लगभग 1,350 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जो एक हिंदू कार्यक्रम के लिए एक असाधारण उपस्थिति थी।
- चल रहा है : आदर्श हिंदू घर अभियान – संपर्क बनाए रखने के लिए सभी मंदिरों में फ्लायर्स वितरित किए जाते हैं, साथ ही मंदिर बोर्डों का नियमित दौरा भी किया जाता है।

विधि प्रकोष्ठ

अवलोकन

41 प्रांतों में टीमों का गठन किया गया है, इनमें से कई टीमें जिला न्यायालय स्तर पर पहले से ही स्थापित हैं। आगे बढ़ते हुए, पहुँच को गहरा करने के लिए मजिस्ट्रियल कोर्ट स्तर पर टीमों के निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

आभासी बैठकें – अधिकांश प्रांतों में नियमित रूप से आयोजित की जाती हैं।

सेमिनार और कार्यशालाएँ – सेमिनार, कार्यशालाएँ और समूह बैठकों सहित जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करना। विभिन्न लॉ कॉलेजों में कानूनी व्याख्यान शुरू किए, जिसका उद्देश्य कानून के छात्रों को हिंदू–संबंधित कानूनी मुद्दों के बारे में शिक्षित करना था।

हिंदू कानूनी क्लिनिक – हिंदुओं को सीधे कानूनी सहायता प्रदान करने के लिए हिंदू कानूनी क्लिनिक (हिंदू कानून सहायता केंद्र) स्थापित करने के कदम। सूरत में सफलतापूर्वक लागू किया गया, जहाँ पहला क्लिनिक 15 दिसंबर, 2024 को खोला गया।

गतिविधियाँ

न्यायाधीशों की बैठक – दिल्ली में आयोजित, जहाँ 31 सेवानिवृत्त न्यायाधीश (2 सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश और 29 उच्च न्यायालय के न्यायाधीश) एक साथ आए।

प्रांत/क्षेत्र सेमिनार और कार्यशालाएँ – अधिकांश प्रांतों में कई सेमिनार, कार्यशालाएँ और सम्मेलन आयोजित किए गए हैं। इन आयोजनों को कानूनी ज्ञान बढ़ाने, चर्चा को बढ़ावा देने और कानूनी पेशेवरों के मजबूत नेटवर्क बनाने के लिए डिजाइन किया गया था। इन आयोजनों में 136 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। इनमें से लगभग सभी कार्यक्रमों में एक या दो सेवानिवृत्त सर्वोच्च न्यायालय या उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की उपस्थिति थी। विशेष रूप से कुछ कार्यक्रमों में मौजूदा न्यायाधीशों ने भी इन कार्यक्रमों में भाग लिया।

धार्मिक पुंज
मठ मंदिर एवं अर्चक पुरोहित सम्पर्क विभाग

- कुल – 47 में से 43 प्रांत प्रमुख हैं।
- चार प्रांतों में प्रांत प्रमुख नहीं हैं।
- पंजाब, पूर्व ओडिशा, दक्षिण बिहार, मणिपुर
- कुल 540 जिलों में प्रमुख हैं।
- 5 माह में 19 प्रांतों में प्रवास हुआ।
- उत्तर गुजरात, अवध, उत्तर पूर्व प्रांत, दक्षिण पूर्व प्रांत, त्रिपुरा, दक्षिण बिहार, उत्तर आंध्र, दक्षिण आंध्र, कोंकण, विदर्भ, मालवा, दक्षिण तमिळनाडु, मध्यभारत, उत्तर कर्नाटक, जयपुर, जोधपुर, चित्तौड़, सौराष्ट्र, पश्चिम महाराष्ट्र
- आयाम कार्यक्रम वृत्त
- प्रांत अभ्यास वर्ग – 3
- उपस्थित जिला – 46 – संख्या – 174
- प्रांत बैठकें – 6
- उपस्थित जिला – 43 – संख्या – 136
- मन्दिर विश्वस्त बैठकें – 5
- सम्मिलित मन्दिर – 90 – संख्या – 235
- पुजारी बैठकें – 12
- सम्मिलित पुजारी बंधु – 410
- पुरोहित सम्मेलन – 5–संख्या – 2025
- पुजारी प्रशिक्षण वर्ग – 5 संख्या – 195
- पुरोहित प्रशिक्षण वर्ग – 1 – नीलमंगल – संख्या – 15
- विशेष कार्यक्रम – महाराष्ट्र – मंदिर स्वच्छता दिनांक 20 अक्तूबर 2024 को मंदिर स्वच्छता – महाराष्ट्र में 5,600 मंदिर स्वच्छता हुई।

संस्कृत

- श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में आयाम के दिल्ली प्रान्त का उपवेशन हुआ। कुल उपस्थिति 22 थी।
- सितम्बर 2024 में नई दिल्ली में केन्द्रीय टोली का एक दिवसीय उपवेशन सम्पन्न हुआ, जिसमें कुल उपस्थिति 17 रही।
- नवम्बर 2024 में आयाम के दिल्ली प्रान्त एवं श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के आन्तरिक गुणवत्ता एवं आश्वासन प्रकोष्ठ (आई.क्यू.ए.सी.) के प्रमुख पदाधिकारियों का उपवेशन सम्पन्न हुआ।
- वेद विद्यालय – वर्तमान में विहिप 13 वेद विद्यालयों का सञ्चालन कर रहा है।
- अशोक सिंघल वैदिक शोध संस्थान, गुरुग्राम – इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली के साथ दिसम्बर, 2024 में एक वैदिक संगोष्ठी का आयोजन किया, जिसका विषयः कृत्रिम मेधा से प्रभावित जीवन के लिए वेदों की शिक्षा था।

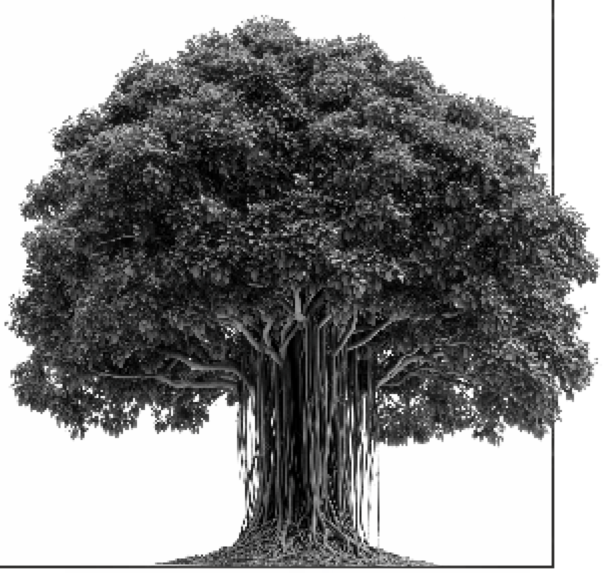

सेवा पुंज
सेवा विभाग
1. सेवाकार्य

वर्ष के अंत में सेवा विभाग एवं अन्य आयामों द्वारा संचालित कुल सेवाकार्य 5,390 चल रहे हैं। इनमें शिक्षा–3,440, स्वास्थ्य–606, सामाजिक–254 तथा स्वावलम्बन के 1090 कार्य हैं।

वर्ष 2024 में सेवा विभाग द्वारा नवीन कार्यों में – 469 की वृद्धि हुई है तथा सेवायुक्त जिलों में 94 की वृद्धि हुई है। वर्तमान में 456 जिले सेवाकार्य युक्त हैं।

संस्कारशालाएँ 944 चल रही हैं, जो 31 प्रान्तों के 95 स्थानों पर संचालित हैं, जिनमें अनुमानित 18,000 बच्चे प्रतिदिन दो घंटे शिक्षा तथा संस्कार ग्रहण करते हैं।

सेवा उपक्रम (एक सप्ताह से अधिक अन्तराल में की गई सेवा गतिविधियाँ) वर्तमान में (4,478 की तुलना में) 11,412 हैं, जिनमें सेवार्थी संख्या (4,59,714 से बढ़कर) 77,53,319 हुई है।

संगठन द्वारा संचालित विविध प्रकार के स्वावलम्बन–कार्यों के माध्यम से 10 प्रान्तों के 2388 भगिनी, बन्धु रोजगार युक्त होकर अर्थार्जन करने में सक्षम हुए हैं।

1. पर्यावरण रक्षण की दृष्टि से 1,11,567 पौधे लगाए गए हैं।
2. अखिल भारतीय सेवाव्रती अभ्यास वर्ग–दिसम्बर माह में बड़ताल, गुजरात में सम्पन्न हुआ, जिसमें 22 प्रान्तों के 132 कार्यकर्ता सहभागी हुए।
3. देश के 14 छात्रावासों में पुरातन छात्र परिषद के कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें 500 से अधिक पूर्व छात्र सहभागी हुए।
4. संस्कारशालाओं के वार्षिकोत्सव क्रमशः हिमाचल, गोरक्ष एवं चित्तौड़ प्रान्तों में आयोजित किए गए।

धर्मप्रसार

- प्रांत टोली–35, चयनित जिले–414, चयनित जिलों में टोली–187,
- अन्य जिलों में प्रमुख–389, चयनित प्रखण्ड–841, टोलीयुक्त प्रखण्ड–409,
- चयनित प्रखण्डों में गाँव–64,790, ग्राम टोली–9,297,
- साप्ताहिक सत्संग–4,397, मासिक भजन मण्डली–3,029,
- प्रांत में पूर्णकालिक–103, धर्मरक्षक–444, चयनित प्रखण्डों में धर्मरक्षक–346.
- **धर्मान्तरण से रक्षा** – परिवार 12,922, संख्या 66,093, हिन्दू कन्या रक्षा–5094, बहू आगमन–1,013,
- **परावर्तन** – ईसाई परिवार–4,295, ईसाई सदस्य–17,416, मुस्लिम परिवार–342, मुस्लिम सदस्य–1,348, कुल परावर्तन संख्या–18,764
- **परावर्तन**–16,480 परिवारों से 83,840 लोगों को धर्मान्तरण से बचाया गया। इसके साथ–साथ 25,606 लोगों को मुसलमान और ईसाई मतों से परावर्तन किया गया है।
- **संत सम्मेलन**–उत्तर आसाम, उड़ीसा पश्चिम, देवगिरि, विदर्भ, दक्षिण कर्नाटक, तेलंगाना, बांसवाड़ा एवं ब्यावर परियोजना में संत सम्मेलन आयोजित किये गये, इन सम्मेलनों में लगभग 400 संतों ने भाग लिया।
- **पुजारी प्रशिक्षण**– दक्षिण गुजरात, उड़ीसा पश्चिम, दक्षिण कर्नाटक, ब्यावर और बाँसवाड़ा में पुजारियों के प्रशिक्षण वर्ग आयोजित किए गए, जिसमें 300 से अधिक प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया।
- **जाति सम्मेलन** – जिन जातियों को संकट का सामना करना पड़ रहा है, उनके समाज के विभिन्न स्थानों पर समाज सम्मेलन आयोजित किए गए। उदाहरणस्वरूप –विदर्भ प्रांत में साहू समाज और सिंधी समाज, देवगिरि प्रांत में मातंग समाज और दक्षिण कर्नाटक प्रांत में मादिगा समाज के सम्मेलन आयोजित किए गए।
- **नूतन मंदिर निर्माण**– दक्षिण कर्नाटक, दक्षिण गुजरात, देवगिरि सहित अन्य प्रांतों में 7 नए मंदिरों का निर्माण और प्राण प्रतिष्ठा की गई।
- **क्षेत्रशः धर्मरक्षक वर्ग** – धर्मरक्षकों का परिचय वर्ग और सप्तदिवसीय प्राथमिक वर्ग के बाद 12 क्षेत्रों में त्रिदिवसीय दक्षता वर्ग आयोजित किए गए। कुल 440 धर्मरक्षकों ने इस वर्ग में भाग लिया।
- **कार्य विस्तार योजना** – चयनित प्रखंडों में कार्यकर्ताओं ने प्रवास करते हुये नूतन ग्राम टोली और नूतन साप्ताहिक सत्संग प्रारंभ किए, जिसमें 806 कार्यकर्ताओं ने समय दान किया। 1,220 स्थानों पर नये ग्रामटोली और 618 स्थानों पर साप्ताहिक सत्संग प्रारंभ किये।
- **समर्पण दिवस** – मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीया तिथि, 17 नवम्बर को स्व. मोहन जोशी जी की पुण्यतिथि को समर्पण दिवस के रूप में मनाया गया। इस कार्यक्रम में 26,000 कार्यकर्ताओं ने समर्पण किया।
- **षष्ठीपूर्ति पूर्णकालिक** – संगठन की षष्ठीपूर्ति वर्ष के अवसर पर 28 नूतन पूर्णकालिक कार्यकर्ता उपलब्ध हुए।
- **सत्संग समारोह** – राजस्थान के अजमेर शहर में 102 मंदिरों में साप्ताहिक सत्संग के साथ सुन्दर काण्ड पाठ के आयोजन प्रारंभ हुए।
- **भजन मंडली समारोह** – बाँसवाड़ा परियोजना के तहत जनजाति क्षेत्रों में 281 गाँवों में मासिक भजन मंडली का आयोजन पारंपरिक रीति से किया जा रहा है, जिनका वार्षिक समारोह गीता जयंती के अवसर पर आयोजित किया गया। इसमें 7,000 भक्तों ने भाग लिया।
- **धार्मिक यात्रा** – अन्य मत छोड़कर हिन्दू धर्म में पुनः आने वाले बन्धुओं को विभिन्न हिन्दू तीर्थ स्थानों के दर्शन करने हेतु प्रेरणा दी जाती है। इस वर्ष तीर्थ स्थलों के दर्शन कराने के लिए 1,200 ऐसे बंधुओं को 16 प्रमुख स्थानों पर भेजा गया।
- **युवति सम्मेलन** – बाँसवाड़ा परियोजना के तहत 17 स्थानों पर छोटी युवतियों के लिए हिंदू संस्कार, स्वदेशी और लव जिहाद के विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें 2,100 बहनों ने भाग लिया।
- पिछले दो वर्षों से केन्द्रीय कार्यालय में मासिक मुफ्त

स्वास्थ्य सेवा शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

- **प्रतिभा विकास केंद्र** – देशभर में 16 प्रांतों के 52 जिलों में 1,044 प्रतिभा विकास केंद्रों का संचालन किया जा रहा है, जिसमें 1,044 आचार्य और 65 सेवाव्रती कार्यरत हैं।
- **धर्मप्रसार की अखिल भारतीय बैठक** : कर्णावती में 20 से 22 सितम्बर 2024 को आयोजित की गयी, जिसमें लगभग 300 कार्यकर्ता सहभागी हुए।

सामाजिक समरसता

समरसता यात्राएँ प्रान्त	–	24
सम्पर्कित प्रखंड	–	402
सम्पर्कित गाँव	–	1,322
बड़ी सभाएँ	–	640
उपस्थिति	–	47,308
नुक्कड़ सभाएँ	–	701
उपस्थिति	–	19,067
संत सहभागी	–	379
कथावाचक	–	15
समरसता पत्रक वितरण	–	90 हजार
समरसता सम्मेलन / गोष्ठी	–	107
उपस्थिति	–	9,589
समरसता यज्ञ	–	29
दम्पति सहभागी	–	104
हिन्दू परिवार	–	402
सहभोज	–	80
कन्यापूजन	–	56
महर्षि भगवान वाल्मीकि जयंती	–	582 स्थान

गोवंश रक्षण एवं संवर्द्धन परिषद

कार्ययुक्त विभाग – 141, कार्ययुक्त जिले – 518, कार्ययुक्त प्रखण्ड – 1,453, कार्यकर्ताओं द्वारा संचालित गौशाला – 545, सम्पर्कित गौशाला – 1,773, कुल गौशालाएँ – 9,493, गौशालाओं द्वारा संरक्षित गोवंश – 14,03,538, पंचगव्य औषधि बिक्री केन्द्र – 566, पंचगव्य चिकित्सा केन्द्र – 271, पंचगव्य औषधि निर्माण केन्द्र – 328, गोवंश उत्पाद केन्द्र – 869, गोविज्ञान परीक्षा प्रतियोगी – 14,656, गोपाष्टमी पूजा – 9,101 स्थान, बकरीद पर गोरक्षा आयोजन – 425, गोवंश आधारित प्रशिक्षण वर्ग – 3,298, प्रशिक्षण वर्ग में किसानों की संख्या – 2,20,009, कसाईयों से गोवंश मुक्त – 30,189, गोचिकित्सा सेवा केन्द्र – 218

प्रचार – प्रसार विभाग

प्रांत प्रमुख – 42

सोशल मीडिया – दर्शन

Website (Vhp.org) Visitors / Views (January to December 2024) :

A.Total State - 37 B.Viewers - 5,97,587 Cities - 1765

।ट्विटर रू

Sl. No.	Handel	Followers	Like	Reach	Impression
1.	**VHP Digital**	399K			1.8 Million
	Bajrang Dal Org	90.6K			1.2 Million
	eHindu Vishwa	23.5K			
	VSK Samvad Kendra	3377			
	VHP Social Media	5019			
	Sewa VHP	939			
	Durga Vahini Org	4776			

ठण्**फ़ेसबुक पेज**रू.

Sl. No.	Handel	Followers	Like	Reach	Impression	Subscription
1.	**VHP Digital**	161K	95K		2.7 Million	
2	**Bajrang Dal Org**	90K	70K	615.8K		
3	**eHindu Vishwa**	8.2k	4.2K	77.9K		
4	**VSK Samvad Kendra**	1.3K	1.1K			
5	**VHPSocial Media**	1.1K	971	26.8K		
6	**Sewa VHP**					
7	**DurgaVahini Org**	7.9K	8.4K	15.9K		

C. WA / Telegram Channel :-

Platform	Channel	Followers	Subscribers
WA चैनल	VHP Digital	1924K	
	Bajrang Dal Org	44	
	DurgaVahini Org	16	
टेलीग्राम चैनल	VHP digital	-	4.1K
	Bajrang dal Org	-	1.3K
	Durga Vahini Org	-	

D. **यूट्यूब:– VHP Digital - 16.3K Subscriber**

E. इंट्राग्राम :

Sl. No.	Handel	Followers	Reach	View
1.	**Digital VHP**	200K	1.5 Million	6.3 Million
2	**eHindu Vishwa**	122K	100.5K	487.9K
3	**Bajrangdal_Org**	38.8k	184K	206K
4	**VHP Social Media**	54.6K	186.5k	379.3K
5	**VSK Samvad Kendra**	4.7k	13.3K	
6	**Durga Vahini Org**	4.5k	18.4K	48.5K
7	**VHPIn News**	4.9K		

पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशन संख्या

01.	हिंदू विश्व (हिन्दी)	–	3,000
02.	गोसंपदा (हिन्दी)	–	5,000
03.	हिंदू विश्व (मलयालम)	–	20,000
04.	विश्व धर्म वाणी (तेलगू)	–	2,500
05.	विश्व हिंदू (तेलगू)	–	3,500
06.	हिंदूवाणी (कन्नड़)	–	2,250
07.	हिंदू मित्रन (तमिल)	–	1,000 (ई पत्रिका)
08.	समरसता सेतु (हिन्दी)	–	2,000
09.	हिंदुबोध (मराठी)	–	1,000
11.	हिंदुवार्ता (बांग्ला)	–	4,500
12.	हिमालय ध्वनि (हिन्दी)	–	3,000
14.	हिंदू संवेदना	–	1,800 मासिक।
16.	राष्ट्र वंदना	–	अर्द्धवार्षिक
17.	शंखनाद (असमिया)	–	त्रैमासिक वर्तमान वर्ष में प्रारंभ।
18.	हिन्दू सन्देश (गुजराती)	–	मासिक 5,000 वर्तमान वर्ष में प्रारंभ।

प्रचार – प्रसार विभाग द्वारा सम्पन्न कार्य –

- मुंबई में वर्ल्ड हिंदू इकॉनमिक फोरम के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका।
- मुंबई में बॉंग्लादेश काउंसलेट पर प्रदर्शन और ज्ञापन पर अग्रिम भूमिका।
- मध्यभारत प्रान्त में दीपावली पर शहरों में पोस्टर लगाए 'अपने से व्यवहार अपनों से व्यापार' जिसकी राष्ट्रीय स्तर पर मीडिया कवरेज और चर्चा हुई। प्रान्त में 28 प्रेस विज्ञप्ति और 12 प्रेस वार्ता आयोजित हुई।
- काशी, पूर्व उड़ीसा, मालवा में प्रांत का प्रशिक्षण वर्ग।
- केंद्र से सूचना सामग्री प्रेषित करने के लिए तंत्र निर्माण, जो तीन स्तर का है–केंद्र, प्रांत, व जिला। समूह का नाम "विचार प्रवाह" है एवं इसी नाम से केंद्र, प्रांत और जिला समूह बनाये गए हैं।
- सोशल मीडिया का अखिल भारतीय प्रशिक्षण वर्ग नागपुर में 28–29 दिसंबर 2024 को सम्पन्न हुआ, जिसमें 23 प्रांत व उप प्रांत के कुल 65 कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।
- भाग्यनगर में मंदिरों की मुक्ति के विषय पर प्रचार के माध्यम से कार्य किया।
- कर्नाटक के विजयपुर में 1500 एकड़ जमीन को जिहादियों से जमीन वापस लेने का अभियान–28 अक्टूबर 2024।
- स्कूलों, मंदिरों पर बम हमले की धमकी पर सोशल मीडिया के माध्यम से जिहादियों के मौन समर्थन के विरुद्ध अभियान।
- विजयवाड़ा में हुए मंदिर मुक्ति कार्यक्रम को लाइव प्रसारित किया गया और उसके फोटो, वीडियो का प्रसार किया गया।
- बजरंगदल द्वारा हुए त्रिशूल दीक्षा कार्यक्रम, शौर्य यात्राओं

को प्रांतों में मीडिया व सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचारित किया गया, केंद्रीय स्तर पर सोशल मीडिया पर प्रचारित किया गया।

- विमर्श के विषय पर वीडियो, फोटो और लेख के माध्यम से कार्य किया गया–स्वामी विवेकानंद जयंती–युवा विमर्श, श्री राम नवमी – सामाजिक समरसता विमर्श, २३ दिसंबर श्रद्धानंद बलिदान दिवस–धर्मांतरण विमर्श एवं दुर्गाष्ट्मी – महिला विमर्श।

केंद्रीय प्रचार प्रसार विभाग द्वारा जुलाई से जनवरी माह तक

प्रेस कांफ्रेंस – 10 प्रेस विज्ञप्ति – 29 लिखित संदेश – 4
वीडियो संदेश – 15 लाइव कार्यक्रम – 2

विशेष सम्पर्क विभाग

सांसद सम्पर्क कार्यक्रम : 02 दिसम्बर, 2024 से 20 दिसम्बर, 2024 तक तीन चरणों में सम्पन्न हुआ– कुल संपर्कित सांसद

लोकसभा	राज्यसभा	कुल	प्रान्त
285	87	372	43
भाजपा		अन्य दल	
244		138	

विषय – शासकीय नियंत्रण से मंदिरों की मुक्ति, वक्फ संशोधन बिल हेतु समर्थन एवं संविधान के अनुच्छेद 29–30 में संशोधन कर अल्पसंख्यकों की भांति हिन्दू समाज को भी धार्मिक शिक्षा प्रदान करने हेतु शिक्षा संस्थाओं के संचालन के अधिकार दिए जाएँ।

संवाद कार्यक्रम

देशभर में व्यवसायी, डाक्टर, अधिवक्ता, CA, CS, CMA, प्रशासनिक अधिकारी, सेवानिवृत्त न्यायाधीश आदि श्रेणियों के विशिष्ट जनों की गोष्ठियाँ आयोजित की गईं, जिनमें कुल उपस्थिति 1852 रही। अखिल भारतीय वर्ग – यादगिरिगुट्टा तेलंगाणा में सम्पन्न हुआ।

विशेष वृत्त

हिमाचल प्रदेश

जनआंदोलन के माध्यम से हिन्दू समाज की सम्पत्तियों पर विधर्मियों द्वारा अतिक्रमण के विरुद्ध शिमला व मण्डी न्यायालयों में कानून लड़ाई लड़कर हिन्दुओं को जीत हासिल हुई।

हिमाचल प्रदेश में विहिप तथा सभी धार्मिक, सामाजिक संगठनों के आह्वान पर 14 सितम्बर, 2024 को हिमाचल प्रदेश व्यापार मण्डल के लोग अपने व्यापारिक प्रतिष्ठानों को बंद कर सुबह 10 बजे से दोपहर 01 बजे तक विहिप के जन–जागरण अभियान में सहभागी हुए।

रामपुर में 300 वर्ष पुराने हनुमान घाट मंदिर को जाने वाले रास्ते को मुसलमानों द्वारा बंद कर दिया गया था। उस रास्ते को खुलवा कर विधिवत पूजा–अर्चना कर रास्ते का नाम हनुमान गली रखा गया।

कोंकण प्रान्त

प्रांत भर में सामाजिक समरसता यात्राओं का आयोजन किया गया, जिनमें विभिन्न वर्गों के बंधुओं, संतों और मुनियों की सक्रिय सहभागिता रही।

इन्द्रप्रस्थ

अगस्त, 2024 में दिल्ली में बाँग्लादेश के अल्पसंख्यकों, लोकतंत्र और मानवाधिकार के बचाव को लेकर एक चिंतन बैठक का आयोजन किया गया।

सितम्बर 2024 में स्वाध्याय मण्डल के साथ श्रीपाद दामोदर सातवलेकर कृत वेदों के हिंदी भाष्य के तृतीय संस्करण का लोकार्पण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत के कर–कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

बजरंग लाल बागड़ा (महामन्त्री)
प्रयाग माघ शुक्ल दशमी, वि.सं. 2081 तदनुसार
07 फरवरी, 2025

नियुक्तियाँ एवं दायित्व परिवर्तन - प्रयाग 09 फरवरी, 2025

		कार्यकर्ता	वर्तमान दायित्व	नवीन दायित्व	केंद्र
केंद्र		श्री नारायण जी अग्रवाल	नवीन	केन्द्रीय प्रन्यासी एवं गौरक्ष की अ.भा.टोली में	
		आदर्श जी गोयल	नवीन	केन्द्रीय प्रन्यासी	
		मनोहरदास जी गुजराती	नवीन	केन्द्रीय प्रन्यासी एवं प्र. समिति सदस्य	
		केशवराजू जी	क्षेत्र संगठन मंत्री	अ. भा. सह गौरक्ष प्रमुख	हुबली
		अशोक भाई रावल	क्षेत्र मंत्री	सदस्य, प्रांत संगठन एवं कर्णावती सह क्षेत्र पालक	
		अभिषेक जी अत्रे	सह प्रमुख विधि	केन्द्रीय विधि प्रमुख	
		बसंत भाई रथ	केन्द्रीय सत्संग प्रमुख	ऑडिशा राज्य पालक	अतिरिक्त दायित्व
		दिलीप भाई त्रिवेदी	केन्द्रीय विधि प्रमुख	केन्द्रीय प्रन्यासी	
		पी. एम. नागराजन जी	केन्द्रीय सह मंत्री	केन्द्रीय सह मंत्री	कोच्चि

		कार्यकर्ता	वर्तमान दायित्व	नवीन दायित्व	केंद्र
क्षेत्र	चेन्नई	सेतुरमन जी	प्रांत संगठन मंत्री	तमिलनाडु राज्य धर्मप्रसार प्रमुख	मदुरई
	बेंगलुरू	कृष्णा भट्ट जी	उत्तर कर्नाटक कोषाध्यक्ष	क्षेत्र समरसता प्रमुख	
	भाग्यनगर	रवि जी	प्रांत मंत्री	क्षेत्र मंत्री	
	कर्णावती	अश्विन भाई पटेल	सह क्षेत्र मंत्री	क्षेत्र मंत्री	
		राजू भाई ठाकर	प्रांत अध्यक्ष उत्तर गुज.	क्षेत्र धर्मयात्रा प्रमुख	
		डॉ मीतेश जी जायसवाल	प्रांत प्रचार प्रमुख उत्तर गुज.	क्षेत्र प्रचार प्रमुख	
	भोपाल	चंद्रशेखर जी वर्मा	प्रांत कार्याध्यक्ष 36 गढ़	क्षेत्र मंदिर अर्चक पुरोहित	
	कोलकाता	अमल जी चक्रवर्ती	क्षेत्र संयोजक ब. दल	क्षेत्र गौरक्ष प्रमुख	
	जयपुर	डॉ. प्रभात जी शर्मा	प्रांत गौरक्ष प्रमुख	क्षेत्र गौरक्ष प्रमुख	
प्रांत		**कार्यकर्ता**	**वर्तमान दायित्व**	**नवीन दायित्व**	**केंद्र**
चेन्नई	केरल	राजसेखर जी	प्रांत मंत्री	प्रांत कार्याध्यक्ष	
		अनिल विलयन जी	प्रांत सह मंत्री	प्रांत मंत्री	
बेंगलुरू	दक्षिण कर्नाटक	दीपक राजगोपालन जी	केन्द्रीय कोषाध्यक्ष	प्रांत अध्यक्ष दक्षिण कर्नाटक	अतिरिक्त दायित्व
भाग्यनगर	उत्तर आंध्र	सुब्बा राजू जी	प्रांत सह मंत्री	प्रांत मंत्री	
	दक्षिण आंध्र	रामुडु जी	प्रांत मंत्री	प्रांत कार्यकारिणी सदस्य	
		कोटिशवर राव जी	प्रांत सह मंत्री	प्रांत मंत्री	
कर्णावती	उत्तर गुजरात	हर्षद भाई जिलेटवाला	प्रांत कार्याध्यक्ष	प्रांत अध्यक्ष	
	सौराष्ट्र	भरत भाई भिंडी	प्रांत उपाध्यक्ष	प्रांत अध्यक्ष	
		भूपत भाई गोवानी	प्रांत मंत्री	प्रांत उपाध्यक्ष	
		देवजी भाई मेतरा	प्रांत सह मंत्री	प्रांत मंत्री	
इंद्रप्रस्थ	जम्मू	राजेश गुप्ता जी	प्रांत कार्याध्यक्ष	प्रांत अध्यक्ष	
मेरठ	मेरठ	जयपाल सैनी जी	प्रांत कार्याधयक्ष	प्रांत कार्यकारिणी सदस्य	
	उतराखंड	चिंतामणी सेमवाल जी	प्रांत उपाध्यक्ष	प्रांत कार्याध्यक्ष	
लखनऊ	काशी	राजनारायण जी	प्रांत सह मंत्री	प्रांत मंत्री	
कोलकाता	बंगाल राज्य	कुशाल कुंडु जी	प्रांत सेवा प्रमुख	बंगाल राज्य सेवा प्रमुख	

प्रयागराज में इस बार का कुंभ क्यों कहा जा रहा है महाकुंभ

डॉ उमेश प्रताप वत्स

प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ की धूम पूरे विश्व में सिर चढ़कर बोल रही है। बारह कुंभ आयोजनों के बाद 144 वर्षों के पश्चात् आने वाले महाकुंभ का महत्व वैसे ही बहुत अधिक हो जाता है तथा श्रेष्ठ प्रशासनिक व्यवस्थाओं एवं सुविधाओं के चलते महाकुंभ महापर्व का महत्व उच्चतम स्तर पर दिखाई दे रहा है। संगम स्थल पर श्रेष्ठतम चिकित्सीय व्यवस्था, ठहरने व रात्रि निवास की व्यवस्था एवं भोजन के साथ–साथ यातायात की उच्चस्तरीय व्यवस्थाएँ महाकुंभ को कभी भी विस्मृत न होने वाला स्मरणीय धार्मिक–साँस्कृतिक आयोजन बना रही है।

यद्यपि कुंभ मेला तो प्रत्येक बारह वर्ष के बाद चारों पावन तीर्थ स्थल हरिद्वार, प्रयागराज, नासिक व उज्जैन में आता ही है और लाखों–करोड़ों भक्त प्रत्येक कुंभ अथवा अर्ध कुंभ में परिवार सहित पावन गोता लगाते ही हैं, फिर इस बार ऐसा क्या विशेष है कि तीर्थराज प्रयाग राज में यह बीसवीं एवं इक्कीसवीं शताब्दी का सबसे बड़ा महाकुंभ माना जा रहा है। जहाँ नित नए–नए रिकार्ड स्थापित हो रहे हैं। उत्तर प्रदेश सरकार का अनुमान था कि मेला समापन तक लगभग 45 करोड़ श्रद्धालु स्नान कर लेंगे, किंतु ताजा आंकड़ों के अनुसार माघ पूर्णिमा तक ही यह 45 करोड़ का आंकड़ा पार होने जा रहा है तथा अंतिम अमृत स्नान 26 फरवरी तक श्रद्धालुओं का यह आंकड़ा यदि 50 करोड़ के पार हो जाये तो कोई आश्चर्य नहीं है।

प्रश्न यह है कि इस बार ऐसा क्या है कि हर व्यक्ति येन केन प्रकारेण महाकुंभ में पहुँचना चाहता है। कैसे आजतक के सारे रिकॉर्ड टूट गये। भीड़ इतनी कि कई स्थानों पर तो सैंकड़ों किलोमीटर का जाम लग गया है और गाड़ियाँ चलने के स्थान पर रेंग रही हैं। यह महाकुंभ मेला जीवन में एक बार होने वाला अनुभव है, जो आध्यात्मिक शुद्धि और सांस्कृतिक विसर्जन प्रदान करता है। अतः सभी झंझावातों को समझते हुए भी हर श्रद्धालु इस श्रद्धा से सरोबार आन्नद को पूर्ण रूप से ग्रहण करना चाहता है। फिर चाहे जाम लगे या असुविधाओं का सामना करना पड़े।

उल्लेखनीय है कि 2025 में 13 जनवरी से शुरू होकर 26 फरवरी को महाशिवरात्रि तक चलने वाला तथा बारह कुंभ मेले के बाद 144 वर्षों के पश्चात् आने वाला महाकुंभ धार्मिक, आध्यात्मिक, और ज्योतिषीय महत्व रखता है। भारतीय संस्कृति की अवधारणा में ही सामूहिकता निहित है। हमने प्रारंभ से ही विश्व को एक कुटुंब की तरह माना है। महाकुंभ जैसे आयोजन केवल देश को ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व को अपने भीतर सहेज लेने का सामर्थ्य रखते हैं। यहाँ जो श्रद्धालु आ रहें हैं, वे भारत से ही नहीं पूरे विश्व से आस्था की डुबकी लगाने आ रहे हैं। यह आयोजन नई पीढ़ी को धर्म और संस्कृति के महत्व को समझाने का एक सुनहरा अवसर है। यहाँ क्या मजदूर क्या किसान, बॉलीवुड के कलाकार हो या सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश, कोई कर्मचारी हो या देश के राष्ट्रपति हर कोई इस पावन अवसर का लाभ उठाना चाहता है। इन सभी लोगों की अवधारणा है कि महाकुंभ में आस्था की डुबकी लगाने से इंसान के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं और मोक्ष की प्राप्ति होती है। महाकुंभ में प्रतिदिन लाखों लोग आकर धार्मिक अनुष्ठान, स्नान, और पूजा करते हैं, यहाँ पूजा करने से कई गुना ज्यादा पुण्य की प्राप्ति होती है। आने वाले श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक उन्नति का अनुभव होता है। जब ग्रामीण क्षेत्रों से जत्थे के जत्थे आते हैं, तो यह यात्रा लोकोत्सव में बदल जाती है, जिसमें भारतीय संस्कृति के विभिन्न सांस्कृतिक रंग पूरे विश्व को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

बारह वर्षों में आने वाले कुंभ मेले के आयोजन का विश्व पटल पर भी कितना महत्व है, इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं साँस्कृतिक संगठन अर्थात् यूनेस्को ने 2017 में कुंभ मेला को 'मानवता की अर्मूत साँस्कृतिक विरासत' की सूची में शामिल कर लिया था। यहाँ पहुंचते ही भारत के भोले–भाले लोगों को विरासत में मिली जो सँस्कृति

– परंपराएँ हैं, उनकी छटा चहूँ ओर बिखर जाती हैं। उत्तर भारत की लोक सँस्कृति दक्षिण भारत के साथ, दक्षिण की पश्चिम के साथ और पश्चिम की पूर्व के साथ तथा पूर्व की उत्तर लोक–सँस्कृतियों के साथ मिलकर जो अठखेलियाँ करने लगती हैं, तो पहाड़ी, मैदानी, मरुस्थलीय व तटीय क्षेत्रों की सँस्कृति के बहुरंगी लोकरंग में झूम उठने वाले अलग–अलग रंगों में भेद करना भूल जाते हैं और यही मिश्रित रंग भारत की वैश्विक अवधारणा वसुधैव कुटुम्बकम को ओर अधिक सुदृढ़ कर जाता है। यहाँ क्या भारतीय, क्या विदेशी सभी संगम की पावन रेती पर नाचते–गाते हुये आन्नद में मग्न होते दिखाई देंगे। यही बात कुंभ को वैश्विक बनाती है।

वैसे तो कुंभ मेला हर तीन वर्षो के बाद चार स्थान हरिद्वार, उज्जैन, नासिक और प्रयागराज में बारी–बारी से मनाया जाता है। इस दौरान ध्यान रखा जाता है कि हर स्थान पर प्रत्येक बारह वर्षों में एक बार कुंभ मेले का आयोजन अनिवार्य रूप से हो। प्रयागराज कुंभ मेला गतिविधियों और अनुष्ठानों से भरा एक अद्‌भुत आयोजन है, नागा साधु और संतों से सुसज्जित ये पवित्र नगरी एक प्रमुख आकर्षण का केंद्र बन जाती हैं। उनका स्वछंद रवैया एवं निडर भाव, भक्ति और अनोखी परम्पराएँ उन्हें देखने के लिए श्रद्धालुओं में उत्सुकता का वातावरण निर्मित करती है। नागा साधुओं का शिवगणों वाला शृंगार, नृत्य व हाव–भाव के साथ अभिनय उन्हें शिव गण ही प्रदर्शित करता है। प्रयागराज महाकुंभ मेला आध्यात्मिकता, संस्कृति और भक्ति के मिश्रण का अनुभव करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। दुनिया भर से लोग एक साथ आते हैं और पूरा वातावरण एकता और आस्था से परिपूर्ण होता है। जो विदेशी श्रद्धालु आध्यात्मिक ज्ञान की खोज करने अथवा भारतीय संस्कृति को जानने की लालसा रखते है, उसके लिए महाकुंभ से श्रेष्ठ अवसर अन्य कोई हो ही नहीं सकता। महाकुंभ मेले में यह सब कुछ सहज प्राप्य है।

कुंभ का सनातन धर्म में विशेष महत्व है। यह अनुष्ठान तप, अनुशासन और कठोर भक्ति का प्रतीक माना जाता है, जहाँ साधक तर्पण–समर्पण, धार्मिक अनुष्ठान के साथ–साथ आध्यात्मिक अनुभूति प्राप्त करते हैं। कुंभ मेला कल्पवास के रूप में हमें अपनी आध्यात्मिक, सामाजिक, मानसिक और शारीरिक चेतनाओं की अनुभूति करने का अवसर प्रदान कराता है। जो लोग कल्पवास करते हैं, उन्हें ब्रह्म मुहुर्त में उठना चाहिए, सत्यवचन बोलना तथा ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। प्रतिदिन तीन बार गंगा स्नान कर पिंतरों का पिण्डदान, नाम जप, सत्संग, सन्यासियों की सेवा, एक समय का भोजन करना, जमीन पर सोना आदि के साथ–साथ उन्हें किसी की निंदा नहीं करनी चाहिए, सभी जीवों के प्रति दयाभाव रखना चाहिए एवं उपवास और दान–पुण्य आदि जैसे शुभ कार्य करने चाहिए। साधक की यम–नियमों का अनुशासन करने से शरीर, मन और आत्मा शुद्धि होती है। साथ ही ईश्वर के प्रति अटूट भक्ति और समर्पण भाव बढ़ता है। ऐसी मान्यता है कि माघ मेले में तीन बार स्नान करने से दस हजार अश्वमेघ यज्ञ के बराबर पुण्य मिलता है। साथ ही इससे जाने–अनजाने में किए गए सभी पाप धुल जाते हैं और भगवान का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त होता है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार समुद्र मंथन के दौरान अमरता कलश का अमृत चार स्थानों पर गिरा था प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक। इसीलिए कुंभ मेला हरिद्वार में गंगा जी के आँचल में, उज्जैन शिप्रा नदी तट पर, नासिक गोदावरी जी के किनारे एवं प्रयागराज में गंगा–यमुना–सरस्वती के पावन संगम पर लगता हैं। प्रयागराज में गंगा, यमुना, सरस्वती के संगम होने के कारण यह सर्वाधिक पावन, महत्वपूर्ण तथा लोकप्रिय माना जाता है।

मेले परिसर में देश के महानतम संत भी आये हुए हैं, जिनके दर्शन अति दुर्लभ है। कथावाचक, अखाड़ों के संयोजक अपने–अपने पंडाल में श्रद्धालुओं के लिए धाराप्रवाह आध्यात्मिक कथाओं का प्रसाद सतत् रूप से जारी है। दूसरी ओर संत सिपाही महंत योगी आदित्यनाथ जी ने करोड़ों –करोड़ों श्रद्धालुओं के लिए जी–जान से सुविधाओं को सुचारू रूप से व्यवस्थित कर रखा है। जिस कारण यह कुंभ निःसंदेह महाकुंभ बन गया है। इन विश्वव्यापी सुव्यवस्थित सुविधाओं के चलते ही देश–विदेश के कोने–कोने से हर आम–खास व्यक्ति महाकुंभ में आस्था की डुबकी लगाने की योजना बना रहा है। यदि यहाँ आने के लिए अधिक से अधिक मात्रा में जन यातायात साधनों का उपयोग किया जाये, तो लंबे–लंबे जामों से भी मुक्ति मिल सकती है। कृपया अगर आप अपनी भावी पीढ़ी को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स और चिप कम्युनिकेशन जैसी तकनीकों के साथ–साथ अपनी प्रकृति, अपनी संस्कृति, अपनी परंपराओं और अपनों के साथ मान–सम्मान का संस्कार देना चाहते हैं, तो परिवार सहित महाकुंभ में आने की योजना अवश्य बनायें।

umeshpvats@gmail.com

दीपक हिंदू धर्म में धार्मिक महत्व

डॉ. आनंद मोहन
सहयोगी - डॉ. अग्रताबेन वधेल, सबरीन बशीर, आलोक मोहन

हिंदू धर्म में दीपक (दीया) का अत्यधिक धार्मिक और वैज्ञानिक महत्व है। दीपक सिर्फ प्रकाश का स्रोत नहीं है, बल्कि यह आध्यात्मिकता, सकारात्मक ऊर्जा और ज्ञान का प्रतीक भी माना जाता है। यह परंपरा हजारों वर्षों से चली आ रही है और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों, त्योहारों और दैनिक जीवन में दीप जलाने की परंपरा मौजूद है।

धार्मिक और पौराणिक महत्व

हिंदू धर्म में दीपक को पवित्रता, ज्ञान और ईश्वर की उपस्थिति का प्रतीक माना जाता है। इसे विभिन्न पूजा–पाठ और अनुष्ठानों में जलाने की परंपरा है। दिवाली, जिसे दीपावली भी कहा जाता है, दीपकों का पर्व है। इस दिन भगवान श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण जी के अयोध्या लौटने की खुशी में दीप जलाए जाते हैं। यह अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। मंदिरों और घरों में दीपक जलाने से सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। दीपक जलाने का अर्थ है अज्ञानता से ज्ञान की ओर बढ़ना। सभी देवी–देवताओं की आरती दीपक जलाकर की जाती है, जिससे ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त होता है। हिंदू दर्शन में पंचमहाभूत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) का उल्लेख है। दीपक की लौ अग्नि तत्व का प्रतीक होती है, जो जीवन शक्ति और ऊर्जा का प्रतीक मानी जाती है। यह माना जाता है कि दीपक जलाने से नकारात्मक शक्तियाँ दूर होती हैं और घर में शांति बनी रहती है। विशेष रूप से तुलसी के पास दीप जलाने से वातावरण शुद्ध रहता है।

वेदों में दीपक का उल्लेख

वेदों में भी दीपक के महत्व का वर्णन मिलता है। ऋग्वेद में कहा गया है : 'तमसो मा ज्योतिर्गमय।' अर्थात् हमें अंधकार से प्रकाश की ओर जाना चाहिए। यह श्लोक ज्ञान और सकारात्मक ऊर्जा की ओर बढ़ने का संदेश देता है। यजुर्वेद में भी दीपक का महत्व वर्णित है : 'दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः। दीपो हरतु मे पापं संध्यादीप नमोऽस्तु ते।।' इसका अर्थ है कि दीपक ईश्वर का प्रतीक है और यह पापों को नष्ट करता है। संध्या के समय दीप प्रज्जवलित करना शुभ और कल्याणकारी होता है। अथर्ववेद में भी अग्नि और प्रकाश का विशेष उल्लेख मिलता है : 'अग्निः सर्वेषां प्रकाशः।' अर्थात् अग्नि समस्त जीवों के लिए प्रकाश और ऊर्जा का स्रोत है। यह शुद्धता और उन्नति का प्रतीक है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से महत्व

दीपक जलाने के पीछे धार्मिक कारणों के अलावा वैज्ञानिक कारण भी मौजूद हैं। ये वैज्ञानिक पहलू हमारे स्वास्थ्य और वातावरण को भी प्रभावित करते हैं। घी या तिल के तेल का दीपक जलाने से वातावरण शुद्ध होता है। वैज्ञानिक दृष्टि से, जब घी जलता है, तो यह वायु को शुद्ध करता है और हानिकारक बैक्टीरिया को खत्म करता है। दीपक की लौ देखने से मन को शांति मिलती है और ध्यान केंद्रित करने में सहायता मिलती है। यही कारण है कि योग और ध्यान में दीपक का उपयोग किया जाता है और वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है, जिससे तनाव और चिंता कम होती है। सरसों या घी का दीपक जलाने से हवा में मौजूद हानिकारक कीटाणु नष्ट होते हैं। पुराने समय में यह प्राकृतिक कीटाणुनाशक के रूप में कार्य करता था। वास्तुशास्त्र के अनुसार, घर के मुख्य द्वार पर दीप जलाने से नकारात्मक ऊर्जा प्रवेश नहीं करती और घर में सुख–समृद्धि बनी रहती है।

विभिन्न प्रकार के दीपक अलग–अलग लाभ प्रदान करते हैं : घी का दीपक वातावरण को शुद्ध करता है, मानसिक शांति और ध्यान केंद्रित करने में सहायक होता है और देवी–देवताओं को प्रसन्न करता है। तेल का दीपक घर की नकारात्मक ऊर्जा को दूर करता है और मनोबल बढ़ाता है। सरसों के तेल का दीपक कीटाणुओं को नष्ट करता है और राहु–केतु दोष को शांत करता है। तिल के तेल का दीपक शनि दोष को कम करता है और शनि ग्रह की कृपा प्राप्त होती है। कपूर का दीपक हवा को शुद्ध करता है, बुरी शक्तियों को दूर करता है और मानसिक शांति प्रदान करता है।

दीपक जलाने के कुछ विशेष नियम भी होते हैं, जिनका पालन करना शुभ माना जाता है, जैसे कि दीपक हमेशा पूर्व या उत्तर दिशा में रखें, क्योंकि यह दिशा शुभ मानी जाती है। इसी तरह रोज शाम को तुलसी के पास दीपक जलाना चाहिए, जिससे घर में सुख–समृद्धि बनी रहती है। पूजा के समय घी का दीपक जलाना शुभ होता है। राहु–केतु दोष निवारण के लिए सरसों के तेल का दीपक जलाना चाहिए। दीप जलाने का शुभ समय सुबह और संध्या समय दीपक जलाना सबसे शुभ माना जाता है।

निष्कर्ष

हिंदू धर्म में दीपक सिर्फ एक जलाने की वस्तु नहीं है, बल्कि यह धार्मिक और वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह आध्यात्मिक उन्नति, शुद्धता और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है। दीप जलाने की परंपरा न केवल धार्मिक कार्यों में बल्कि वैज्ञानिक लाभों के कारण भी महत्वपूर्ण है। हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है : 'सर्वं ज्योतिश्च ज्योतिषि दीपो भवतु नः सदा।' अर्थात् दीपक सदा हमारे जीवन में प्रकाश लाए और हमें ज्ञान एवं समृद्धि प्रदान करे। आइए, हम भी अपने जीवन में दीप जलाने की इस पवित्र परंपरा को बनाए रखें और अपने जीवन को ज्ञान और प्रकाश से भरपूर करें।

गुड़ मिठाई नहीं अमृत है

गुड़ हमेशा हल्के काले रंग वाला ही खायें

गुड़ का सेवन अधिकांश लोग ठंढ़ी में ही करते हैं, वह भी थोड़ी मात्रा में, इस सोच के साथ की ज्यादा गुड़ खाने से नुकसान होता है। इसकी प्रवृत्ति गर्म होती है, लेकिन यह एक गलतफहमी है, गुड़ हर मौसम में खाया जा सकता है और पुराना हमेशा अच्छी औषधि के रूप में काम करता है। आयुर्वेदिक संस्था के अनुसार यह शीघ्र पचने वाला, खून बढ़ाने वाला व भूख बढ़ाने वाला होता है। इसके अतिरिक्त गुड़ से बने चीजों को खाने से बीमारियों में राहत मिलती है।

गुड़ में सुक्रोज 59.8 प्रतिशत, ग्लूकोस 21.8 प्रतिशत, खनिज तरल 26 प्रतिशत तथा जल अंश 8. 86 प्रतिशत मौजूद होते हैं। इसके अतिरिक्त गुड़ में कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा और ताम्र तत्व भी उचित मात्रा में पाए जाते हैं। इसलिए चाहे हर मौसम में आप गुड़ खाना ना पसंद करें, लेकिन ठंढ़ में गुड़ जरूर खाएं।

यह सेलेनियम के साथ एक एंटी आक्सीडेंट के रूप में कार्य करता है। अच्छे गुड़ में मध्यम मात्रा में कैल्शियम, फास्फोरस व जस्ता पाया जाता है, यही कारण है कि इसका रोजाना सेवन करने वालों का इम्युनिटी पावर बढ़ता है। अच्छे गुड़ में मैग्नीशियम अधिक मात्रा में पाया जाता है, इसलिए यह बॉडी को रिचार्ज करता है, साथ ही इसे खाने से थकान भी दूर होती है।

गुड़ और काले तिल के लड्डू खाने से सर्दी में अस्थमा परेशान नहीं करता। रोजाना गुड़ का सेवन हाई ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करता है, जिन लोगों को खून की कमी है, उन्हें रोज थोड़ी मात्रा में गुड जरूर खाना चाहिए। इससे शरीर में हीमोग्लोबिन का स्तर बढ़ता है।

गुड़ का हलवा खाने से स्मरण शक्ति बढ़ती है, शरीर से जहरीले तत्वों को बाहर निकलता है व सर्दियों में यह शरीर के तापमान को विनियमित करता है। यह लड़कियों के मासिक धर्म को नियमित करने में मददगार होता है।

अगर आप गैस या एसिडिटी से परेशान हैं, तो खाने के बाद थोड़ा अच्छा गुड़ जरूर खाएं, ऐसा करने से यह दोनों ही समस्या नहीं होती। गुड़ सेंधा नमक, काला नमक मिलाकर चाटने से खट्टी डकार आना बंद हो जाती है।

ठंढ़ में कई लोगों को कान में दर्द की समस्या होने लगती है, ऐसे में कान में सरसों का तेल डालने से व गुड़ और घी मिलाकर खाने से कान का दर्द ठीक हो जाता है। गुड़ में भरपुर विटामिन और मिनरल्स पाए जाते हैं, जो स्किन को पोषित करते हैं। गुड़ से स्किन सॉफ्ट, हेल्दी, हाइड्रेट और ग्लोइंग बनती है। इससे चेहरे पर झुर्रिया भी नहीं पड़ती और यह पिंपल्स होने से भी रोकता है।

कम करें वजन

मीठा खाने से कैलोरी बढ़ती है, जिससे वजन ज्यादा होने लगता है, लेकिन गुड़ में पाए जाने वाले मिनरल्स विशेषतः पोटैशियम वजन को कंट्रोल करने में मदद करते हैं। साथ ही यह मेटाबोलिज्म भी बढ़ाता है।

कब्ज

गुड़ पाचन का एक बहुत अच्छा साधन है। इससे पाचन तंत्र दुरूस्त बना रहता है और कब्ज, एसिडिटी जैसी समस्याएं नहीं होती हैं। खाने के बाद गुड़ खाना सेहत के लिए बहुत फायदेमंद रहता है।

घने बाल

गुड़ आयरन का एक अच्छा स्त्रोत है। इसे विटामिन सी से भरपुर चीजों जैसे नींबू, आंवला आदि के साथ खाने से बाल लंबे, घने, काले और हेल्दी बनते हैं। ऐसा माना जाता है कि महिने में दो बार शैंपू से पहले गुड़, मुल्तानी मिट्टी और दही का मिश्रण बालों में लगाने से बाल प्राकृतिक रूप से खूबसूरत और लंबे होते हैं।

लिवर की सफाई

गुड़ का एक छोटा सा टुकड़ा आपके शरीर से अपशिष्ट पदार्थों को बाहर कर देता है। अगर कोई एल्कोहल का बहुत ज्यादा इस्तेमाल करता है, तो लिवर की सफाई के लिए गुड़ बेस्ट है।

जोड़ों के दर्द में सहायक

गुड़ में कैल्शियम पाया जाता है, जो हड्डियों को मजबूत बनाता है। गुड़ के सेवन से हड्डियों से जुड़ी समस्याओं और जोड़ों के दर्द में राहत मिलती है। रोज अदरक के एक टुकड़े के साथ गुड़ खाने से जोड़ों का दर्द ठीक होता है और ज्वॉइंट्स मजबूत बनते हैं।

अस्थमा

गुड़ में एंटीऑक्सीडेंट्स पाए जाने से यह गले और फेफड़ों के इंफेक्शन से बचाव करता है। साथ ही अस्थमा मरीज को सांस लेने में होने वाली दिक्कत को भी दूर करता है।

इम्यूनिटी

गुड़ में एंटिऑक्सीडेंट्स, जिंक, सेलेनियम पाया जाता है, जो हमारे इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाता है। जिससे बैक्टीरिया से लड़ने में मदद मिलती है। इसलिए रोज एक छोटा सा गुड़ का टुकड़ा खाना चाहिए।

खून की सफाई

अगर रोजाना गुड़ खाया जाए तो यह खून को प्योरिफाई करता है। इससे खून साफ रहता है। गुड़ खाने से ब्लड हीमोग्लोबिन बढ़ता है और खून संबंधी कई बीमारियों की जोखिम कम होती है।

प्रकृति पूजा के लिए कुम्भ की यात्रा

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

गंगा–यमुना–सरस्वती का संगम, जिसे त्रिवेणी कहा जाता है के प्रति श्रद्धा का अप्रतिम उत्सव महाकुम्भ तीर्थराज प्रयागराज में चल रहा है। अभी तक संगम में डुबकी लगाने वालों की सँख्या 60 करोड़ के पार पहुँच चुकी है। श्रद्धालुओं की सँख्या नित्य ही बढ़ती जा रही है, इससे यह सँख्या 65 करोड़ के पार पहुँचने की सम्भावना प्रकट की जा रही है। अत्यंत शांतिप्रिय रीति से जनता आ रही है, सभी प्रशासनिक बंधनों के उपरान्त भी लोग लम्बी दूरी की पदयात्रा कर के संगम तट पर पहुँच रहे हैं, श्रद्धा की डुबकी लगा रहे हैं और उसी श्रद्धा और प्रेम की पूंजी लेकर अपने स्थानों की ओर प्रस्थान कर रहे हैं। हर हर गंगे, जय गंगा मईया की, प्रयागराज की जय जैसे अनेक प्रकार के नारे लगाते हुए श्रद्धालु आवागमन कर रहे हैं।

प्रकृति पूजा के लिए कुम्भ की यात्रा

यहाँ प्रयागराज के संगम तट तक की यात्रा का अभिष्ट न कोई मन्दिर है, न कोई मूर्ति है, न कोई दर्शन की अभिलाषा है, न कोई कर्मकांड करना है, किसी पुजारी की कोई आवश्यकता भी नहीं है, बस केवल संगम में डुबकी लगाना है, स्नान करना है, माता से सीधा संवाद करना है, डुबकी लगाते हुए कुछ कहना है, कुछ मांगना है, तीनों पवित्र माताओं की गोद में–उनके आंचल का संसर्ग प्राप्त करना है। यह सीधा–सीधा प्रकृति प्रेम है, पर्यावरण के प्रति अनुराग है। ये नदियाँ नहीं हैं, धाराएँ नहीं हैं, ये तो उस उमड़ रही हिन्दू जनता की स्वयं की प्रकृति है, उसकी जीवन धारा है। प्रकृति के प्रति इस अप्रतिम अनुराग का इससे बड़ा उदाहरण दुनियाँ में दूसरा कहीं नहीं मिलेगा।

नदियाँ माता हैं। तीन नद, बाबा कहलाते हैं। नदियों का जीवन और सृष्टि के प्रति अवदान जब हिन्दू समझता है, उनके प्रति मन भावों से भर जाता है, उनके प्रति आदर और श्रद्धा का अतिरेक अन्तर्मन में उमड़ता है, तो मुख से एक ही शब्द निकलता है माँ। नर्मदा माँ, गोदावरी माँ, कावेरी माँ, कृष्णा माँ, सरस्वती माँ, यमुना माता, गंगा माता, सरयू माता, शिप्रा माता। भारत की सभी नदियाँ हमारी माँ हैं। तीन नद हैं, जो माँ नहीं हैं, ये पुरूष हैं, इसीलिए इन्हें नदी नहीं नद कहा जाता है, ये हैं– ब्रह्मपुत्र, सिन्धु और सोन। इन्हें पुरूष होने के कारण बाबा कहकर सम्बोधित किया जाता है।

नदियों से जन्म–जन्मान्तर का नाता

जैसे माता अपने स्तन का अमृत पिलाकर हमें पालती है, माता की भांति गाय अपना दूध पिलाकर पालती है, वैसे ही ये नदी रूप में प्रवाहमान माताएँ अपनी अमृत धारा के जल से सिंचित कर हमें पालती हैं। इनके जलधारा में बहाकर लाई गई मिट्टी से भूमि उपजाऊ होती है, पृथ्वी की उर्वरा शक्ति का बहुत बड़ा कारण ये नदियाँ ही हैं। इनके जल से भूमिगत जल का स्तर बना रहता है, नदियाँ मीठा जल लेकर आती हैं और उससे भूमि में वाटर टेबल को भी बनाये रखती हैं, अपनी धारा से भी भूमि को सीचिंत करती हैं, सभ्यताओं को सदियों से पालती आई हैं। भूमि पर होने वाली बरसात में भी इनकी भूमिका है। भूमि पर वनस्पतियों के पालन और विस्तार में भी

इनकी भूमिका है। जल के बिना जीवन की कल्पना भी कठीन है। कहते हैं कि नदियों की जलधाराओं, इनके तटों पर ही अधिकांश सभ्यताओं का विकास हुआ। आज भी विश्व के अधिकांश नगर नदियों के तट पर बसे हैं। अतः ये नदियाँ हमारी माताएँ हैं और इनसे जन्म–मरण का और उसके बाद का भी हमारा अटूट नाता है।

नदियों में भी विशेष है गंगा, यमुना, सरस्वती

गंगा भव तारिणी है, गंगा के दर्शन मात्र से भी जन्म–मरण के चक्र से मुक्ति मिल जाती है, स्नान करना तो अतिशय फलदाई है। यह पापमोचिनी भी है और पुण्यदायिनी भी। यहाँ लोग पुण्य पाने के लिए आते हैं, मोक्ष पाने के लिए आते हैं। प्रयाग की गंगा अत्यंत दुर्लभ कही गई है, यह मोक्षदायिनी है। यमुना सूर्य की पुत्री है और यम की बहन है, यम ने अपनी इस छोटी बहन को बरदान दिया है कि तुम्हारी धारा में जो स्नान करेगा, उसको मैं स्पर्श नहीं करूंगा, उसकी दुर्घटना नहीं होगी, अकाल मृत्यु नहीं होगी, गम्भीर व्याधियों से उसकी रक्षा होगी। गंगा का जल क्षारिय प्रकृति का है और औषधिय गुणवत्ता से युक्त होने के साथ उपयोगी नैसर्गिक सुक्ष्म लवणों से युक्त है। इसीलिए स्नान करने और पीने से, दोनों विधियों से शरीर का पीएच मान ठीक रखने में सहायक है। यमुना जामुन के वनों से निकलकर आती है, होकर बहती है, इसीलिए भी इसका नाम जमुना है, इसका जल भी भरपुर क्षारियता से युक्त है। इसीलिए यह भी अपने भक्तों के शरीर के बाह्य संतुलन और आंतरिक संतुलन को विकसीत करने में सहायक है। इन दोनों के मिलन से जो अदृश्य प्रभाव प्रकट होता है, उस तेजस्विता का नाम ज्ञानरूपा सरस्वती है। ज्ञानियों के देश भारत में ज्ञान को सभी सम्पदाओं में सर्वोपरि माना गया है। अतः इस ज्ञान की प्रतिनिधि रूप माता सरस्वती के इस संगम में समाहित हो जाने से मोक्ष की सम्पूर्ण समिधा पूर्ण हो जाती है। इसीलिए यह संगम और इस संगम की भूमि प्रयागराज सभी तीर्थों में सर्वोपरि तीर्थराज कहलाते हैं।

सृष्टी के आरम्भ में ब्रह्मा जी के दस यज्ञ

जब ब्रह्मा जी को भगवान विष्णु ने सृष्टी का दायित्व सौंपा, तो सृष्टि आरम्भ करने से पूर्व, उस काल के अनंतर और बाद में कुल मिलाकर दस अश्वमेध यज्ञ ब्रह्मा जी ने प्रयागराज के इस पवित्र संगम तट पर किया। इन उच्चस्तरीय अर्थात प्रकृष्ट यज्ञ जिसे याग कहा जाता है, के सम्पन्न होने से इस स्थान को प्रयाग कहा जाता है, प्रकृष्ट यागः इति प्रयागः।। इन्द्र भगवान ने भी यहाँ दस अश्वमेध यज्ञ किया था। भगवान विष्णु का यह निवास स्थान माना जाता है। भारद्वाज ऋषि का आश्रम यहाँ था। अनेक ऋषियों के तप का स्थल है प्रयाग।

प्रयागराज का यह कुम्भ अलौकिक

इस कुम्भ में जितने साधु–संत पधारे, जितने शिविर यहाँ बसाये गए, इतने बड़े क्षेत्र में निकट भूतकाल में कभी भी पूर्णकुम्भ का आयोजन नहीं हुआ था। सबसे बड़ा क्षेत्र, सर्वाधिक संत, सर्वाधिक कल्पवासी, सर्वाधिक श्रद्धालु आये इस कुम्भ में, सबने श्रद्धा की डुबकी लगाई, तीनों माताओं के नैसर्गिक आलिंगन का मातृसुख लिया और अपने गंतव्य को प्रस्थान कर गए। यह ऐसे अनेक मामलों में अद्भुत और अलौकिक कुम्भ था।

आधे से अधिक हिन्दू महाकुम्भ में आए

माना जाता है कि 120 करोड़ हिन्दू भारत और बाहर के सभी देशों में मिलाकर निवास करते हैं। उनमें 60 करोड़ हिन्दू अबतक यहाँ महाकुम्भ में आ चुके हैं, शिवरात्री के प्रमुख स्नान दिवस तक यह सँख्या 65 करोड़ या उससे अधिक हो जाने की सम्भावना है। अबतक लगभग 80 देशों के लोग इस महाकुम्भ में आ चुके हैं। अनेक ईसाई और मुस्लिम देशों के लोग भी आये हैं यहाँ डुबकी लगाने। यह महाकुम्भ हिन्दू समाज की धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना का सबसे बड़ा उत्सव सिद्ध हुआ है।

वैश्विक हिन्दू जागृति का चरम बिन्दू

आज भारत समेत दुनियाँ के सभी देशों में निवास करने वाले हिन्दू सभी हिन्दू परिवारों से कोई न कोई सदस्य इस महाकुम्भ में आकर संगम में डुबकी लगा चुके हैं। यदि सँख्या, अनुपात और प्रतिशत की भी बात की जाए, तो दुनियाँ में किसी भी मजहब या रिलिजन का कोई ऐसा आयोजन नहीं है, जहाँ इतनी सँख्या, इस अनुपात या प्रतिशत में एकत्र होती हो, हुई हो, यह कर पाना भविष्य में भी अन्य मज़हबों के लिए सम्भव नहीं है। अभी जो जागृति इस महाकुम्भ के आलोक में देखने को मिली है, यह मेरी दृष्टि में भारत में हिन्दू जागृति का चरम बिन्दू है। इस जागृति को उचित दिशा दे पाना हिन्दू समाज के सभी कार्यकर्ताओं के लिए एक चुनौती है।

शालीन और उच्चादर्श युक्त हिन्दू समाज

जो भी हिन्दू महाकुम्भ में आया, उसको कोई भी कठिनाई रोक नहीं पाई, हर बाधा को पार करते हुए वह संगम तक पहुँचा। जो निर्देश प्रशासन ने दिया सबका पालन किया, जहाँ रोका गया रूक गया, जिधर जाने को कहा गया उधर से ही गया, लम्बी दूरी की यात्रा समेत सभी शर्तें स्वीकार की और विनम्र भाव से शालीनतापूर्वक संगम में डुबकी लगाया। अपने जीवन के उच्च आदर्शों का हिन्दू समाज ने यहाँ प्रकटीकरण किया, सेवा भी किया, भोजन–भंडारा भी कराया, सहयोगी भाव पूर्ण पराकाष्ठा पर दिखी, किसी भी नियम–कानून का उल्लंघन नहीं किया, जीवन के उच्चतम प्रतिमानों को पुनः परिभाषित किया।

स्वर्णिम हिन्दू काल का संकेत

जब–जब हिन्दू जागृत और संगठित होता है, तब–तब जगत के कल्याण का वातावरण निर्मित होता है, सम्पूर्ण विश्व को अपना परिवार मानने वाला हिन्दू समाज में उच्चतम आदर्शों को स्थापित करता है, भौतिक समृद्धि के साथ–साथ धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों के माध्यम से भी समाज को उच्चतर आदर्श से युक्त करता है। उत्तम स्वास्थ्य के साथ अमरत्व और मोक्ष की जिज्ञासा से सबका कल्याण करता है। इस परम जागृति से विश्व अतिशय सुन्दर बनेगा, भारत का चरमोत्कर्ष होगा, यह सब दृष्टिगोचर हो रहा है।

murari.shukla@gmail.com

महाकुंभ से निखरा हिन्दुत्व और बढ़ा योगी का सियासी कद

अजय कुमार
लखनऊ

उत्तर प्रदेश आजकल महाकुंभमय हो गया है। हर तरफ एक जैसा दृश्य है। कोई महाकुंभ में डुबकी लगाकर अपने आप में धन्य महसूस कर रहा है, तो कोई डुबकी लगाने के लिए आतुर है, जिसको जैसा मौका मिल रहा है, वह उस हिसाब से संगम नगरी प्रयागराज की तरफ प्रस्थान कर रहा है। प्रयागराज में साधू–संतों का तो जमावाड़ा है ही, यहाँ पहुँचने वाले श्रद्धालुओं का आंकड़ा भी लगातार बढ़ता जा रहा है, जो श्रद्धालु महाकुंभ पहुँचते हैं, वह वाराणसी में बाबा विश्वनाथ और अयोध्या में रामलला के दर्शन करने का भी पुण्य कमा लेने का मौका नहीं छोड़ रहे हैं। महाकुंभ के अंतिम स्नान तक प्रदेश की आबादी से दोगुना श्रद्धालु प्रयागराज पहुँच चुके होंगे। यह विश्व रिकार्ड है, जो यदि कभी टूटेगा भी तो किसी कुंभ में ही टूटेगा। हाल यह है कि महाकुंभ की व्यवस्था देखने और इस आयोजन को शांतिपूर्वक सम्पन्न कराने के लिए योगी सरकार और शासन–प्रशासन सबके सब एक पैर पर खड़े नजर आ रहे हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तो महाकुंभ परिक्षेत्र में पत्ता भी हिलता है, तो एलर्ट मोड में आ जाते हैं। योगी की तो पूरी की पूरी कैबिनेट ही प्रयागराज पहुँच जाती है। सबसे खास बात यह है कि जितने भी श्रद्धालु यहाँ पहुँच रहे हैं, वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह से अधिक मुख्यमंत्री की तारीफ कर रहे हैं, जिसके राजनीतिक निहितार्थ भी कम नहीं हैं। आज की तारीख में हिंदुत्व की दृष्टि से योगी बीजेपी के सबसे लोकप्रिय नेता बन गए हैं। इस मामले में उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी तक को पीछे छोड़ दिया है। सफल महाकुंभ में आग लगने की घटना और सबसे बड़े मौनी अमावस्या के अमृत स्नान के दिन मची भगदड़ में करीब तीस श्रद्धालुओं की मौत की घटना से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व्यथित भी दिखे, लेकिन जल्द ही सब कुछ सुचारू कर लिया गया और साधु–संतों से लेकर आम श्रद्धालु तक आराम से स्नान करते दिखे।

महाकुंभ का मोह और इस दौरान संगम में डुबकी लगाने के लिए वह लोग तो व्याकुल हैं ही, जो सनातन धर्म का पालन करते हैं, लेकिन इसके अलावा भी पूरी दुनिया से लोग महाकुंभ के आकर्षण में प्रयागराज खिचें चले आ रहे हैं। यह लोग सनातन के बारे में अधिक से अधिक जानने को व्याकुल हैं। सबसे खास बात यह है कि महाकुंभ की आस्था अखिलेश यादव जैसे उन नेताओं को भी यहाँ खींच लाई है, जिनका योगी और बीजेपी से छत्तीस का आंकड़ा रहता है, लेकिन इस मौके पर भी अखिलेश

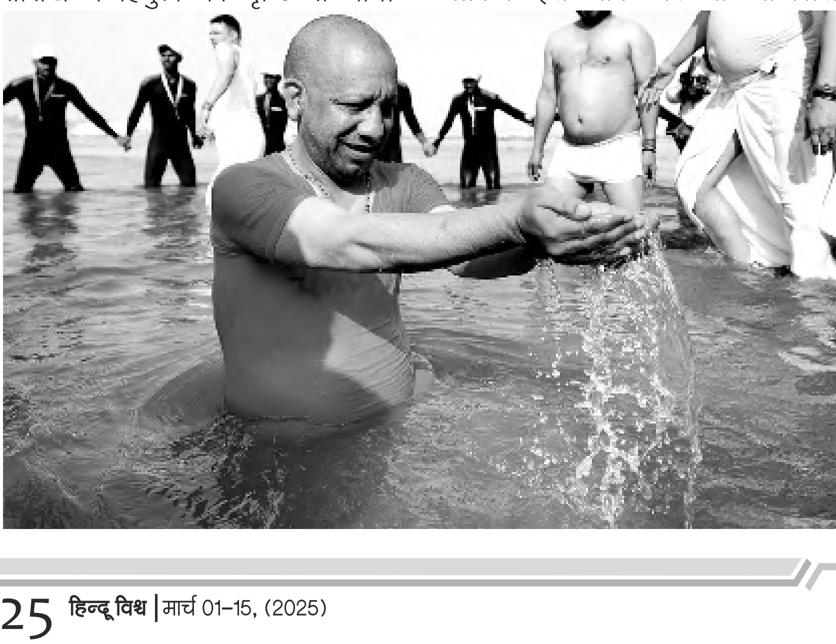

राजनीतिक बातें करने से नहीं चूके। उन्होंने कहा कि यह बड़ा आयोजन है। हमें याद है कि जब समाजवादी पार्टी की सरकार थी, तब हमें कुंभ कराने का मौका मिला था। तब हमने कम संसाधन में इसे बेहतर तरीके से कराया था। यह बात तमाम स्टडी कहती हैं, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी भी कहती है। अपनी सरकार के समय सफल कुंभ का दावा करते हुए अखिलेश ने पूर्व नगर विकास मंत्री और 2013 में कुंभ के आयोजन की जिम्मेदारी संभालने वाले आजम खान की तारीफ भी की। अखिलेश ने कहा कि उन्होंने काफी सीमित संसाधनों के सहारे कुंभ को यादगार बनाया था। वहीं अखिलेश के संगम स्नान करने पर उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि अखिलेश यादव देर आए दुरुस्त आए। हरिद्वार में गंगा स्नान और महाकुंभ स्नान के बाद उम्मीद है कि अब आस्था को चोट पहुँचाने वाले बयानों से बचेंगे। केशव ने कहा कि महाकुंभ की विशेषता अनेकता में एकता है। जो सपाई और कॉंग्रेसी अब भी महाकुंभ को लेकर मानसिक और दृष्टि दोष से ग्रसित हैं, वे इलाज कराएँ या न कराएँ पर महाकुंभ स्नान जरूर करें। इसके साथ ही कैबिनेट मंत्री ओम प्रकाश राजभर ने भी अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि कल तक कुंभ की निंदा करने वाले लोग आज कुंभ में जा रहे हैं। यह संविधान की देन है।

समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने तो महाकुंभ में डुबकी लगाने के बाद यहाँ की व्यवस्था को लेकर योगी सरकार पर हमला बोला, वहीं कॉंग्रेस ने तो महाकुंभ पर ही प्रश्न चिंह खड़ा कर दिया। औसत प्रतिदिन जब महाकुंभ में करीब 95 लाख लोग आस्था की डुबकी लगा रहे हैं, तब प्रयागराज से 925 किमी दूर, मध्य प्रदेश के महू यानी संविधान निर्माता डॉक्टर अंबेडकर की जन्मस्थली पर कॉंग्रेस की 'जय बापू, जय भीम, जय संविधान रैली'

में कॉंग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने यहाँ तक कह दिया कि 'गंगा में डुबकी लगाने से क्या गरीबी दूर होती है, क्या भरपेट खाना मिलता है?' इस पर बुद्धीजीवियों का कहना है कि कॉंग्रेस को न तो हिन्दू धर्म रास आता है न यही दिखता है कि महाकुंभ से कैसे रोजगारों का सृजन हो रहा है। ऐसा लगता है कि गैर बीजेपी दलों के नेताओं को डर सता रहा है कि महाकुंभ के चलते कहीं उनकी हिन्दुओं को बांटों और राज करो वाली मुहिम को झटका नहीं लग जाए। महापुरूषों की जन्मस्थली प्रयागराज में आजकल सिर्फ और सिर्फ हिन्दुत्व ही नजर आ रहा है। यहाँ न कोई अगड़ा है और न कोई पिछड़ा या दलित।

बात खड़गे के महाकुंभ से लोगों के पेट नहीं भरने वाले बयान की की जाये, तो इसका जबाब सीएम योगी आदित्यनाथ से बेहतर कौन दे सकता है, जबकि योगी पहले ही कह चुके हैं कि एक पर्यटक या श्रद्धालु जब यूपी आता है, तो ट्रेन, बस, टैक्सी या प्लेन का उपयोग करता है। होटल, टेंट या धर्मशाला में रुकता है। होटल, रेस्टोरेंट या ढाबे पर खाना खाता है, कुछ खरीदारी भी करता है। इस तरह वह औसतन पाँच हजार रुपये खर्च करता है। प्रयागराज महाकुंभ मेला में 40 करोड़ लोगों के आने का अनुमान है। ऐसे में देश–प्रदेश की अर्थव्यवस्था में अकेले महाकुंभ दो लाख करोड़ रुपये का योगदान देगा। महाकुंभ आस्था, आधुनिकता और स्वच्छता का मॉडल बनेगा।

खैर बात बीजेपी के भीतर की कि जाए, तो महाकुंभ का भव्य आयोजन करके मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बीजेपी के सबसे बड़े हिन्दुत्व वाले पोस्टर मैन बन गये हैं। योगी के खिलाफ पार्टी के अंदर यदाकदा जो विरोध के स्वर सुनाई पड़ते थे, वह भी फिलहाल ठंडे पड़ गये हैं। योगी की जो तस्वीर उभर रही है, उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि 2017 वाले योगी जी 2025 में काफी बदल चुके हैं। 2017 में भले ही योगी को मोदी और शाह की मेहरबानी से सीएम की कुर्सी पर बैठाया गया था, लेकिन अब योगी को 'हाथ' लगाना किसी के बस की बात नहीं है। 2017 के विधान सभा चुनाव से पूर्व तक जो बीजेपी के तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष केशव प्रसाद मौर्य मुख्यमंत्री पद के सबसे बड़े दावेदार थे, वह अब योगी से काफी पीछे खिसक गये हैं। केशव ने भी देर से ही सही (2022 के विधान सभा चुनाव के बाद) योगी को अपना नेता मान लिया है। अब वह विरोध की भाषा नहीं बोलते हैं। 2027 के यूपी विधान सभा चुनाव भी संभवतः योगी के नेतृत्व में ही लड़ा जायेगा। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि आज भी योगी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की पहली पसंद हैं। कुछ लोग तो 2029 के आम चुनाव में योगी को पीएम के फेस के रूप में भी देख रहे हैं। यही योगी की सियासी पूंजी है।

मोदी कैबिनेट के दिग्गज मंत्री भी महाकुंभ में डुबकी लगाने के बाद कसीदे पढ़ते नजर आये। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह महाकुंभ में सपरिवार स्नान कर चुके हैं। दस फरवरी को राष्ट्रपति और पांच फरवरी को प्रधानमंत्री के महाकुंभ आने का प्रोग्राम है।

ajaimayanews@gmail.com

'कर्म योगी कामेश्वर'

श्री कामेश्वर चौपाल एक ऐसे व्यक्तित्व का नाम है, जिन्होंने आजीवन संघर्ष करते हुए संपूर्ण हिंदू समाज की एकता, एकात्मता सामाजिक समरसता और रामत्व के प्रसार के लिए सतत सक्रिय रहे। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के महामंत्री और विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय उपाध्यक्ष श्री चम्पत राय ने यह जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि भारत–नेपाल सीमा से सटे उत्तर बिहार के सुपौल जिले के ग्राम कमरेल में कोशी नदी के किनारे जन्मे श्री कामेश्वर चौपाल जी ने 26 अप्रैल 1956 को माँ भारती की पुण्य धरा में जन्म लिया। 1976 में वे संघ के संपर्क में आए और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में कार्य प्रारंभ किया। 1981 में विश्व हिंदू परिषद के बिहार में तत्कालीन छोटा नागपुर प्रांत के सह संगठन मंत्री और बाद में बिहार के प्रांत संगठन मंत्री रहे। 9.11.1989 को श्री रामजन्मभूमि पर शिलान्यास कामेश्वर चौपाल के कर कमलों द्वारा कराया गया था। वर्तमान में वे उत्तर बिहार प्रांत के माननीय अध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे थे। श्री चम्पत राय ने कहा कि वे बिहार विधान परिषद के सदस्य भी रहे, वर्तमान में वे विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय उपाध्यक्ष भी थे।

उन्होंने आगे बताते हुए कहा कि 9 नवंबर 2020 को श्री राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण के लिए बने श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के आजीवन न्यासी के रूप में उनका चयन भारत सरकार ने किया था और अंतिम समय तक वे ट्रस्टी थे।

1 वर्ष पूर्व उन्हें गुर्दे की समस्या पैदा हुई, तो दिल्ली स्थित गंगा राम अस्पताल में उनका गुर्दा प्रत्यारोपण हुआ। वे ठीक भी हो गए थे, किन्तु लगभग एक माह पूर्व उनको पुनः गंगाराम अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। दुर्भाग्य से 6 फरवरी 2025 को रात्रि 10:30 बजे वे इस नश्वर संसार से विदा हो गए। श्री राय ने जानकारी दी कि श्री कामेश्वर चौपाल अपने पीछे एक बेटा श्री विद्यानंद विवेक और दो बेटियाँ श्रीमती लीला देवी व प्रतिभा वात्सल्य छोड़ गए हैं। उनका पार्थिव शरीर आज 7 फरवरी को पटना लाया गया। 8 फरवरी को प्रातः 9:00 बजे उनके गृह ग्राम कमरेल में उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा।

श्री चम्पत राय ने यह भी कहा कि श्री कामेश्वर जी एक कर्मयोगी, धर्मनिष्ठ और देश–धर्म और समाज की सदैव चिंता करते रहे और आजीवन हिंदू समाज की एकता, एकात्मता और राष्ट्रीय जीवन मूल्यों के विकास के लिए सतत रूप से सक्रिय रहे। हम दिवंगत पुण्यात्मा की शांति व परिजनों को धैर्य प्रदान करने की प्रभु से कामना करते हैं। आप उनके पुत्र श्री विद्यानंद विवेक से उनके फोन नंबर 7654582445 पर संपर्क कर अपनी संवेदना व्यक्त कर सकते हैं।

— विजयशंकर तिवारी
केन्द्रीय प्रचार प्रसार प्रमुख

सत्यवती महाविद्यालय दिल्ली में धार्मिक रूप से प्रताड़ित हिंदू भाई बहनों को नागरिकता मिलने (CAA) के उपलक्ष्य में विहिप द्वारा आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित विहिप महामंत्री श्री बजरंग लाल बागड़ा जी तथा प्रांत के पदाधिकारी व आम जनमानस

प्रयागराज में अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा आयोजित
जनजाति युवा कुंभ में उपस्थित आचार्य म.मं. पूज्य स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज

सिरोही (राज.) में बजरंग दल द्वारा आयोजित त्रिशूल दीक्षा कार्यक्रम को
संबोधित करते बजरंग दल के क्षेत्र संयोजक श्री किशन प्रजापति तथा कार्यक्रम में उपस्थित बजरंग दल के कार्यकर्ता

तिरूपति (आंध्र प्रदेश) में 'टेंपल कनेक्ट' के एक अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में 'मंदिरों की सरकारी नियंत्रण से मुक्ति'
विषय पर कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे।

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6

email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 28.02.2025
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

LPS BOSSARD
Proven Productivity

PRODUCT SOLUTIONS

Whether a suitable standard solution or a customized component - fastening technology must be matched with a specific customer need. At LPS Bossard we have a solution to your every fastening challenge.

APPLICATION ENGINEERING

Product designers and production engineers all face a maze of challenges when designing and building their products. Making the right choice of fastening solution speeds up assembly and reduces life cycle costs. The application engineers at LPS Bossard have the expertise to help make that critical decision.

SMART FACTORY LOGISTICS

Smart Factory Logistics is an end-to-end service for managing your B- and C-parts. It is a time-tested and proven methodology that helps to leverage hidden potential for productivity improvement.

Rajesh Jain
M.D., LPS Bossard Pvt. Ltd.
Trustee, Vishva Hindu Parishad

LPS Bossard Pvt. Ltd.
NH-10, Delhi-Rohtak Road
Kharawar Bye Pass
Rohtak-124001 (INDIA)
T +91 1262 305164-198
F +91 1262 305111,112
india@lpsboi.com
www.bossard.com

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी